समाज विकास

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• जून २०११ • वर्ष ६२ • अंक ६

सम्मेलन के प्रेरणा पुरूष एवं पूर्व अध्यक्ष

नन्द किशोर जालान

हमारे बीच नहीं रहे

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक

वैवाहिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में धन प्रदर्शन एवं फिजूलखर्ची पर चिन्ता

बैठक में बायें से दायें - मोहनलाल तुलस्यान, सन्तोष सराफ, हरिप्रसाद कानोड़िया, सीताराम शर्मा, रामअवतार पोद्दार, आत्माराम सोंथलिया व कैलाशपति तोदी

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

SCARF
worth ₹ 360/-
OR
Over night travel bag
worth ₹ 360/-
OR
*Books worth ₹ 360/-

TIE + Scarf
worth ₹ 1080/-
OR
Travel bag + Scarf
worth ₹ 1080/-
OR
*Books worth ₹ 1080/-

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie + Scarf **OR** ☐ Bag + Scarf ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ Scarf **OR** ☐ Bag **OR** ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-	☐ Exclusively for Students
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

Name : Mr./Ms.

Address :

City/District:

State: Country: Pin Code :

E-mail : Mobile : Landline : STD CODE

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. dated: for Rs. drawn on:

In favour of CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED

*** For books see reverse page**

Signature: date:

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

समाज विकास

◆जून २०११ ◆वर्ष ६२ ◆अंक ६ ◆एक प्रति - १० रु. ◆वार्षिक-१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	*पृष्ठ संख्या*
चिट्ठी आई है	४
बड़ाबाजार संवाद के सम्पादक शिव सारदा सम्मानित	४
सम्पादकीय : मारवाड़ी सम्मेलन यानि नन्द किशोर जालान – ***सीताराम शर्मा***	५-६
आपके विचार	६
अध्यक्षीय : श्री नन्द किशोर जालान : दूरदर्शी व कर्मशील – ***हरि प्रसाद कानोड़िया***	७
श्रद्धांजलि : सम्मेलन के प्रेरणा पुरुष श्री नन्द किशोर जालान हमारे बीच नहीं रहे	९-११
शोक संदेश	१२
श्री नन्द किशोर जालान : संक्षिप्त जीवन परिचय	१३-१६
भ्रष्टाचार! भ्रष्टाचार! भ्रष्टाचार! – ***संतोष सराफ***	१७
राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में वैवाहिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में धन प्रदर्शन.....	१९-२०
List of National Standing Committee & Sub-Committee	२१-२३
परोपकारी मारवाड़ी समाज....... – ***परमजीत नायडू***	२५-२६
लोकतंत्र की भाषा.... ***शम्भु चौधरी***	२७
SMS की दुनिया	२९
गीत – ***डॉ. मोहन तिवारी आनंद***	२९
बुढ़ापा अभिशाप नही अनुभव है जीवन का	३०
पुस्तक समीक्षा – सहज राजस्थानी व्याकरण / अग्रवाल समाज का अध्ययन	३१
इन्कम टैक्स की नई फाईल क्यों और कैसे? – ***गोविन्द जैथलिया***	३२
प्रान्तीय समाचार – महेश बैंक का व्यापार १५०० करोड़	३३
प्रान्तीय समाचार – राजस्थानी की मान्यता के लिए आमरण-अनशन	३३
हास्य व्यंग्य – डीकरा, तेरा भी जवाब नही	३४
डोकानिया शिशु मंदिर	३४

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७

फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: samajvikas@gmail.com

के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित

प्रेरक संपादक : नंदकिशोर जालान ◆ संपादक : सीताराम शर्मा

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

मतदान का महत्व

"अप्रैल २०११ की पत्रिका के माध्यम से समाज के लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री मामराज अग्रवाल को पद्मश्री से सम्मानित किया, जानकर अति प्रसन्नता हुई। मेरी ओर से उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करें।

मेरा सादर आग्रह है, पद्मश्री हेतु कागजात आदि भेजने की प्रक्रिया का डिटेल ब्यौरा 'समाज विकास' पत्रिका में निकलवाने का कष्ट करें ताकि समाज के अन्य सदस्य भी लाभान्वित हो सकें।

मतदान के महत्व का अलख जगाने का कार्यक्रम- राष्ट्र की राजनीतिक भागीदारी में समाज को अपने कर्त्तव्यों से अवगत कराना सराहनीय कदम है।"

– **पुष्पा चोपड़ा**, पटना

जीवन संध्या

मार्च की समाज-विकास पत्रिका प्राप्त हुई। इस पत्रिका की उपयोगिता समाज को सही दिशा में ले चलने में एवं मार्गदर्शन देने में अनुकरणीय है। समाज की दिक्कतों एवं कुरीतियों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

ओम लाडिया द्वारा लिखा 'जीवन संध्या की कटु सच्चाई शासन नही समझौता' अपने आप में एक अनोखा लेख है जिन्होंने वृद्ध अवस्था में होने वाली कठिनाइयों पर समाज के लोगों का ध्यान आकर्षित किया है।

मनमोहन बागड़ी द्वारा लिखा लेख "जिन्दगी जिंदादिली का नाम है!" अपने आप में एक अनोखा उपहार स्वरूप है समाज को। इनकी इस व्याख्या में जीवन में भरपूर आनन्द लाने का सार भरा है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष कानोडियाजी द्वारा लिखा "समाज के नाम राष्ट्रीय अध्यक्ष का संदेश" में समाज को कई ऐसे निर्देश दिये गए है, जो विचारणीय ही नहीं अमल करने योग्य है।

– **सत्यनारायण तुलस्यान**
मुजफ्फरपुर

चिट्ठी आई है

नई सरकार का स्वागत

पश्चिम बंगाल में ममताजी के नेतृत्व में बनी नई सरकार का मैं स्वागत करता हूँ क्योंकि इसके द्वारा एक ऐसी वामपंथी सरकार की विदाई संभव हुई है जिसने केवल विकास के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी राज्य को पटरी से उतार दिया था और एक ऐसा खौफनाक कैडर राज स्थापित कर दिया था जिसे हटाना लगभग असंभव माना जाने लगा था। एतदर्थ नई सरकार को बधाई एवं शुभकामना।

अव नई सरकार सभी क्षेत्रों में चुनौतियों से कैसे निपटती है इस पर ही प्रान्त एवं सरकार दोनों का ही भविष्य निर्भर करेगा। कठिनाइयां एवं आशंकायें भी कम नहीं है। पर अभी तो सुखद भविष्य की कामना करे एवं अच्छे कार्य में सहयोग देने का ही अवसर है।

– **जुगल किशोर जैथलिया**, अधिवक्ता
कोलकाता

बड़ाबाजार संवाद के सम्पादक शिव सारदा सम्मानित

ऑल बंगाल एडिटर्स एंड जर्नलिस्ट्स ऐसोसिएशन की ओर से बीते शनिवार को कोलकाता प्रेस क्लब में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर साहित्य व शिल्प जगत् की कुछ विशिष्ट हस्तियों का सम्मान भी किया गया। नाटकों के क्षेत्र में रंगकर्मी उषा गांगुली, अभिनय के क्षेत्र में अभिनेत्री जय मुखर्जी, साहित्य व सम्पादन के क्षेत्र में बड़ाबाजार संवाद के सम्पादक व कवि-पत्रकार शिव सारदा, श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए कल्याण मुखर्जी आदि विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट प्रतिभाओं को मानपत्र एवं मोमेन्टो भेंट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर अपने संक्षिप्त सम्बोधन में 'बड़ाबाजार संवाद' के संपादक शिव सारदा ने कहा कि सबकी अपनी समस्या है अतः अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी। संस्था बगल में खड़ी रह कर अतिरिक्त उर्जा देती है।

सम्पादकीय

मारवाड़ी सम्मेलन यानि नन्द किशोर जालान

– सीताराम शर्मा

पिछले ४-५ दशकों से नन्द किशोर जालान मारवाड़ी सम्मेलन के पर्याय थे, मारवाड़ी सम्मेलन यानि नन्दकिशोर जालान। इस व्यक्ति के साथ मारवाड़ी सम्मेलन का इतिहास जुड़ा है। मुझे सम्मेलन में उनके साथ पिछले २० वर्षो में नजदीकी के साथ लगातार काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जालानजी के मारवाड़ी सम्मेलन से लगाव एवं प्रतिबद्धता की एक अजीब प्रेरक कहानी है। १९४६-४७ से २०११ मृत्युपर्यन्त सम्मेलन के प्रति पूर्णतया समर्पित जीवन रहा जालानजी का। सम्मेलन की दूर-दराज, गाँव, नगर, जिला शाखाओं में आज जो एक नाम सुपरिचित है वह है जालानजी का।

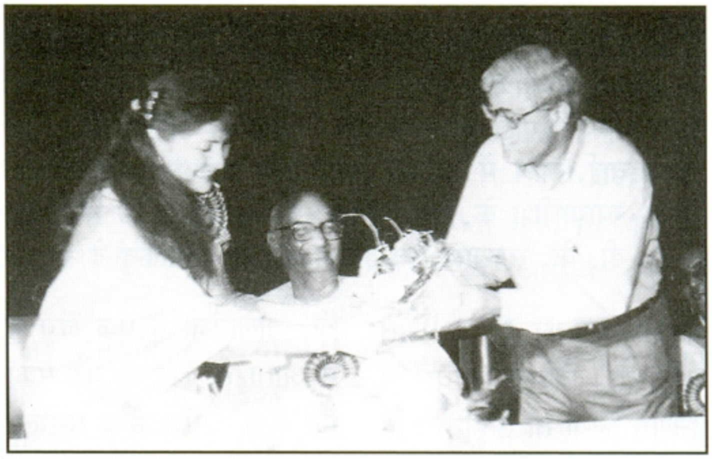

सम्मेलन की महिला समिति की तत्कालीन अध्यक्षा श्रीमती अलका बांगड़ सम्मेलन के महामंत्री सीताराम शर्मा का पुष्पगुच्छ से स्वागत करती हुई। बीच में प्रसन्न मुद्रा में है अध्यक्ष नन्दकीशोर जालान।

जालानजी विभिन्न संस्थाओ में सक्रिय रहे – मारवाड़ी छात्र संघ, पोद्दार छात्र निवास, कलकत्ता चेम्बर, विशुद्धानन्द अस्पताल आदि लेकिन सम्मेलन में उनके प्राण बसते थे। १९५० में मात्र २६ वर्ष की आयु में जालानजी को राष्ट्रीय महामंत्री निर्वाचित किया गया जिस पद पर वे १९६१ तक रहे, १९७४ में पुनः महामंत्री बने। १९८२ मे जमशेदपुर में सर्वसम्मति से राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। १९८९ से चार वर्षों तक सम्मेलन की गतिविधियां प्रायः बन्द हो गयी थी, हाईकोर्ट मे मामला चल रहा था, सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय ने ताला लटक रहा था। ऐसी विकट स्थिति में १९९३ में जालानजी को दिल्ली अधिवेशन में पुनः अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

सम्मेलन में जालानजी के साथ घनिष्ठता का जो सिलसिला इसी १९९३ में मेरे संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री बनने से आरम्भ हुआ वह उनके जीवन के अंतिम क्षणों तक बना रहा। जालानजी के साथ १९९३ से ९७ तक राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री के रूप में तत्पश्चात् १९९७ से २००१ तक राष्ट्रीय महामंत्री के पद पर काम सीखने का अद्भूत एवं सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। यह जालानजी की सम्मेलन के प्रति प्रतिबद्धता, समर्पण एवं ईमानदारी ही थी जिसने मुझे सम्मेलन से जोड़ कर रखा।

२००१ से जालानजी सम्मेलन में किसी भी पद पर नही थे लेकिन वे हम सबके लिये सम्मेलन के महात्मा गांधी थे। उनके सुझाव ही सम्मेलन से जुड़े सभी पदाधिकारियों के लिये आदेश थे। बिना पद पर रहे वे सुबह से शाम तक सम्मेलन का कार्य करते थे। पदाधिकारियों को कार्य के लिये प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते थे। आजकल यह कहाँ देखने को मिलता है। पद खत्म, काम खत्म। पूर्व पदाधिकारियों की बात तो छोड़िये, पदाधिकारी भी काम करना संस्था पर अहसान जताना समझते है।

जालानजी ने बराबर सम्मेलन को एक नयी ऊँचाई पर ले जाने का प्रयास किया। यह संयोग नहीं, बल्कि उनकी कटिबद्धता थी कि सम्मेलन की स्वर्ण एवं हीरक जयंती पर क्रमशः तत्कालीन भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह एवं डॉ. शंकर दयाल शर्मा पधारे। बात १९९५ की है, संयुक्त राष्ट्र संघ पर लिखित मेरी एक पुस्तक के राष्ट्रपति डॉ. शंकर

दयाल शर्मा द्वारा विमोचन का राष्ट्रपति भवन दिल्ली में कार्यक्रम था। जालान जी कार्यक्रम में दिल्ली पधारे एवं मुझसे कहा – "आपके राष्ट्रपति जी से अच्छे सम्बन्ध है, आपको उन्हे सम्मेलन की हीरक जयन्ती समारोह में लाना है। इससे सम्मेलन की गरिमा बढ़ेगी।" सम्मेलन हर क्षण उनकी सोच में बसता था।

वर्त्तमान में अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित मारवाड़ी सम्मेलन भवन के क्रय में भी जालान जी का ही हाथ था। उनका प्रायः प्रतिदिन फोन आता था। एक दिन उन्होंने कहा – "महामंत्री जी सम्मेलन के लिये मकान खरीदेंगे।" मैने कहा कि यह भी तो आपको ही तय करना है। जालानजी ने कहा – मैं तो अब सम्मेलन में कुछ भी नहीं हूँ। आप और अध्यक्ष तय कीजिये। मैने कहा – बात क्या है। यह मकान एक समय जालानजी के परिवार का ही था जिसे बिड़ला परिवार को बेच दिया गया था। बिड़ला परिवार ने जब इस मकान को विक्रय का निर्णय लिया तो उन्होने प्रथम जालानजी की रूचि जाननी चाही। मुझे जब जालानजी ने यह सब बताया तो मैने उनसे कहा कि पहले वे अपने पुत्रों से बात कर परिवार में निर्णय ले तो उचित रहेगा। यह जालानजी का सम्मेलन के प्रति प्रेम था कि प्रस्ताव प्राप्त होते ही पहले उनके मन में सम्मेलन भवन की बात आयी, अपने परिवार की नहीं। दो-तीन दिन बाद जालानजी ने पुनः मुझे फोन किया एवं कहा कि परिवार में अभी आवश्यकता भी नही है तथा मन भी नही है, अतः सम्मेलन इस पर विचार कर सकता है। जालानजी, संचेतीजी, मोहनलालजी एवं मैं श्री सुदर्शन कुमारजी बिड़ला से मिले एवं बात पक्की हुई। मुझे बराबर यह लगा कि जालानजी ने भवन क्रय के विषय में परिवार से अधिक सम्मेलन को प्राथमिकता दी। कई वर्षों बाद जब भवन के निर्माण कार्य में देरी हो रही थी, जालानजी ने एक दिन मुझसे कहा कि कभी कभी मन में आता है, हम ही यह मकान खरीद लेते। शोक सभा में मैने कहा – एक भव्य सम्मेलन भवन का निर्माण ही जालान जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बदलते सामाजिक मूल्यों पर गोष्ठी का उद्घाटन करते पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. ए.आर. किडवाई, साथ में अध्यक्ष नन्दकिशोर जालान, सीताराम शर्मा, न्यायाधीश के. एम. युसुफ, बंगाल पुलिस के निर्देशक डी. के. सान्याल एवं इतिहासज्ञ प्रो. अमलेन्दु दे

आपके विचार

"समाज विकास" अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र है जो गत ६१ वर्षों से कोलकाता से प्रकाशित किया जा रहा हैं।

सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य हैं समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता। समाज के साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु विभिन्न पहलुओ पर "समाज विकास" के माध्यम से चर्चा आयोजित की जाती है।

समाज सुधार एवं समरसता के अन्तर्गत देहज-दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, विधवा विवाह, बढ़ते तलाक, टूटते परिवार, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, अर्न्तजातीय विवाह, वृद्धाश्रम क्यों, आदि विषयों पर विचार-विवेचना "समाज सुधार" के माध्यम से करने का प्रयास किया जाता है।

आपके विचारों को प्रकाशित कर हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

सीताराम शर्मा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
एवं सम्पादक, समाज विकास

अध्यक्षीय

श्री नन्द किशोर जालान : दूरदर्शी व कर्मशील

– हरि प्रसाद कानोड़िया

श्री जालानजी प्रतिभाशाली, सामाजिक, प्रगतिशील, दूरदर्शी, जौहरी, कर्मशील व्यक्ति थे। प्रेसिडेन्सी कॉलेज जहां देश के प्रथम राष्ट्रपति पढ़ते थे, वहां के छात्र थे। समाज कल्याण की भावना छात्रकालीन समय से थी। संगठन करने की क्षमता भी थी। उसी समय इनकी मुलाकात श्री इन्द्र चंद संचेती से हुई। श्री संचेतीजी में संगठन करने की विशेष क्षमता थी। हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस के छात्र रहे थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय में कानून का अध्ययन कर रहे थे। अपनी क्षमता से संचेतीजी वहां की छात्र युनियन के सभापति बने। फिर तो सोना में सुहागा। दोनों गहरे दोस्त बन गये। स्व. ईश्वरदास जालान श्री भंवरमल सिंघी की सहायता से अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन को प्रगति के पथ पर ले जाने में लग गये। समाज में कई कुरीतियां थी। पर्दा प्रथा, देहज दिखावा, फिजुलखर्च आदि - आदि। प्रेरणा देकर और गाँधीगिरी करके उन कुरीतियों को दूर करने में लग गये।

मेरा परिचय श्री संचेतीजी से १९६० में हुआ। हमारे परिवार के इन्कम टैकस के वकील थे। धीरे धीरे हमलोगों की दोस्ती हो गयी। मैं भी नन्द किशोर जी और संचेतीजी के साथ १९६४-६५ से जुड़ गया। मैं विशेष सक्रिय कलकत्ता ट्रेड एसोसिएशन में था। यह संस्था १८३० में बनी थी। व्यापार, वाणिज्य विकास के लिये सरकार से सम्पर्क करने में लगी हुई थी। सरकारी नीति में सुधार पर विशेष बल था। मैं इस संस्था का अध्यक्ष १९७६-७७ में बना। हमलोगों ने सलाह करके संस्था का नाम ट्रेड ऐसोसियेशन से बदल कर कलकत्ता चेम्बर आफ कॉमर्स कर दिया। इस के बाद से श्री जगजीवन राम, श्री सिद्धार्थ शंकर राय, श्री ज्योति बसु तथा और राज्यों के बड़े-बड़े नेता चेम्बर में आने लगे। चेम्बर की नीतियों में सुधार किया। उस समय सीमित पार्टनरशीप का मेमोरेन्डम सरकार को दिया गया। उसी समय सम्मेलन में राष्ट्रपति जैल सिंह जी आये। हम लोग चेम्बर और सम्मेलन के आदर्श को लेकर प्रधानमंत्री श्री मुरारजी देसाई से मिले थे।

सम्मेलन के भवन के लिये इनका प्रयास सराहनीय था। भवन के लिये करीबन ३५-४० लाख रुपये इकट्ठा करना था। फिर समाज के कल्याण के लिये निकल पड़े। साथ में संचेती, सीताराम शर्मा, मुझे लेकर एक दो दिन में पूरा रुपया इकट्ठा हो गया। समाज की एकता और संगठन के विकास के लिये देश भर में दौरा किया। सम्मेलन के भीष्मपिता बने। निःस्वार्थ कर्म करना ही ध्येय रहा। लोगों को बराबर आगे लाने की चेष्टा करते थे। कार्यकर्त्ताओं का अभाव नहीं हो, यहीं प्रयास रहा। जौहरी थे। पहचान थी। किस मे क्या क्षमता है। क्षमता के अनुसार लोगों को आगे बढ़ाते रहें।

इनके साथ मैं विशुद्धानन्द हॉस्पीटल से जुड़ा। जालानजी वहां के मंत्री थे। अस्पताल की अवस्था बहुत खराब थी। काफी सुधार किया गया। काफी अर्थ लाये। प्रगति हुई। अच्छे-अच्छे लोगो को साथ में लाये। सरकार के कब्जे में दो आलीशान बहुमूल्य मकान थे। दोनो मकान अथक प्रयास से छुड़वाए। पुराना फँसा काफी रूपया निकलवाए। खाली पुराने मकान के लिये हमलोगों ने मिलकर अर्थ की व्यवस्था पूरी की एवं मरम्मत करवाई। ४० चेम्बर डॉक्टर के लिये बनवाए। श्री राधाकृष्ण कानोड़िया प्रधान ट्रस्टी थे। काफी सहयोग रहा।

उनकी आत्मा की शान्ति के लिये हम सभी प्रार्थना करें। उनकी आत्मा को ईश्वर अपनी ज्योति में मिलाए। ऐसे कर्मशील एवं त्यागी व्यक्ति ईश्वर समाज में हमेशा दें।

ॐ शान्ति! ॐ शान्ति!! ॐ शान्ति!!!

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

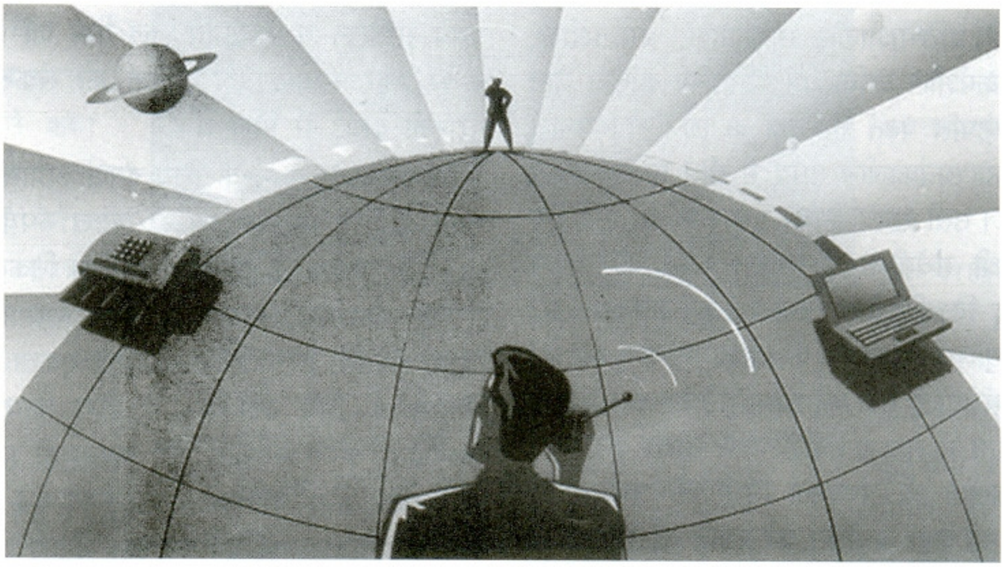

Independent entity with over 38,000 towers and over 83000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

श्रद्धांजलि

सम्मेलन के प्रेरणा पुरुष श्री नन्द किशोर जालान हमारे बीच नहीं रहे

सुप्रसिद्ध समाज सुधारक व चिंतक तथा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रेरक पुरुष श्री नंद किशोर जालान का विगत ९ जून को आकस्मिक निधन हो

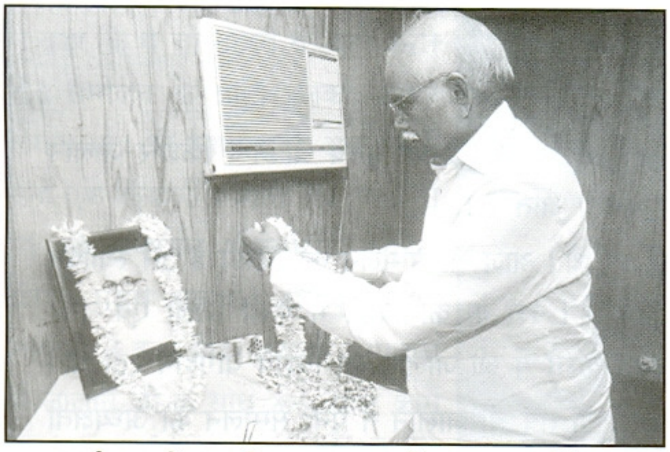

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

गया। वे ८७ वर्ष के थे। उनके निधन से मर्माहित सम्मेलन एवं पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में ११ जून २०११ की सांध्य बेला में मर्चेन्ट चेंबर ऑफ कॉमर्स के सोमानी सभागार में एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने उन्हें विलक्षण प्रतिभा का धनी बताते हुए कहा कि जालानजी जीवन पर्यन्त सम्मेलन के लिए गतिशील थे। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि जालानजी सम्मेलन के पर्याय थे, सम्मेलन में उनका योगदान अतुलनीय है। उन्होंने कहा कि जालान जी ने अपने सेवाकार्यो से संस्था को एक नई ऊँचाई प्रदान की है। सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार ने बताया कि जालानजी के साथ उनका परिचय काफी घनिष्ट था एवं वर्षो उनके सन्निकट काम करने का मौका मिला। वे सम्मेलन के प्रति पूर्व समर्पित व्यक्ति थे। सम्मेलन के पूर्व महामंत्री श्री रतन शाह ने कहा कि जालानजी के निधन से संस्था के एक युग का अंत हो गया। उनके जाने से एक मजबूत कड़ी बिखर गयी। समाज में चेतना लाने के

महामंत्री सन्तोष सराफ श्रद्धांजलि देते हुए

लिए वे लगभग ५-६ दशकों से सक्रिय थे। श्री भानीराम सुरेका ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में कहा कि उनके जाने से समाज ने काफी कुछ खोया है। समाज व सम्मेलन से जुड़े अन्य लोगों में जालानजी के सबसे पुराने व करीबी मित्र श्री

श्री जालान के पुराने नजदीकी इन्द्रचन्द संचेती भावविह्वल भाव में।

इंद्र चंद्र संचेती ने बताया कि जालानजी के साथ उत्तम संबंध छात्र जीवन से था। उन्होंने वर्षो जालानजी के साथ काम किया, लगभग दस संस्थाओं में। 'समाज-सुधार' उनका मूल मंत्र था। श्रद्धांजलि देते हुए लगभग रो पड़े थे श्री संचेती। श्री हरिप्रसाद बुधिया ने अपने संबोधन में कहा कि जो इंसान पैदा होता है, उसे जाना ही पड़ता है। लेकिन उनके दिखाए मार्ग का अनुसरण करना ही उसके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने कहा कि जालानजी जिंदगी भर कुरीतियों के खिलाफ लड़ें। सम्मेलन

शोक प्रस्ताव

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के स्तम्भपुरुष, भीष्म पितामह एवं प्रेरणा पुरुष श्री नन्द किशोर जालान का आकस्मिक निधन सम्मेलन एवं समाज के लिये एक अपूर्णनीय क्षति है।

श्री जालान पिछले ६० वर्षों से आधिक से सम्मेलन से जुड़े हुए थे। आज जो सम्मेलन का स्वरूप है उसे स्थापित एवं विकसित करने में श्री जालान का अतुलनीय योगदान रहा है। देश के कोने-कोने में फैली जिला एवं नगर शास्वाओं का दौरा कर सम्मेलन के संगठन की नींव को मजवूत करने में श्री जालान का विशेष योगदान रहा था।

१९९३ में जब सम्मेलन एक बिखराव की विषम परिस्थिति में था तब श्री जालान ने पुनः सम्मेलन की अध्यक्षता को स्वीकार कर संस्था को पुनर्जीवित किया। पिछले ४-५ दशकों मे श्री जालान की सहभागिता एवं भूमिका इतनी सक्रिय एवं महत्वपूर्ण थी कि श्री जालान को सम्मेलन का पर्यायवाची कहा जा सकता है। बढ़ती उम्र एवं अस्वस्थता के बावजूद श्री जालान अन्तिम दिनो तक सम्मेलन से न केवल सक्रिय रूप से जुड़े थे बल्कि कई जिम्मेदारियो को संभाल रखा था।

श्री जालान की सम्मेलन के उद्देश्यो – राष्ट्रीय एकता, समाज सुधार एवं समरसता के प्रात पूर्ण प्रतिवद्धता थी एवं सामाजिक प्रश्नो पर उनके विचार सम्मेलन को प्रेरित करते थे। मारवाड़ी सम्मेलन भवन के क्रय में उनका योगदान अति महत्वपूर्ण था।

मारवाड़ी सम्मेलन उनकी सेवाओं के लिये सदैव ऋणी रहेगा। एक सक्रिय, संगठित एवं प्रभावशाली मारवाड़ी सम्मेलन का निर्माण कर हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते है।

यह सार्वजनिक शोक सभा उनके देहावसान पर हार्दिक दुःख व्यक्त करती है एवं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

मौन श्रद्धांजलि

समाज सुधारक, कर्मठ एवं लगनशील कार्यकर्ता, कथनी व करनी का धनी बताया।

शोक प्रस्ताव सम्मेलन के महामंत्री श्री संतोष सराफ ने पढ़ा तथा सभा का संचालन किया सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका ने। श्री महेश सहरिया, श्री नवल जोशी, श्री शांति लाल जैन, श्री द्वारका प्रसाद डाबड़ीवाल, श्री जयगोविंद इंदौरिया, श्री ओम लड़िया, श्री प्रमोद शाह, श्री प्रेमचंद सुरोलिया, श्री अरुण मल्लावत, श्री महावीर प्रसाद मनसकिया आदि ने स्व. जालानजी को श्रद्धासुमन अर्पित

के कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने कहा कि वे जो सोचते थे, वहीं करते थें। सम्मेलन के प्राति उनका भरपूर लगाव था। श्री श्याम सुंदर अग्रवाल ने उन्हें एक क्रियाशील व्यक्ति की उपमा दी तो श्री सांवरमल भीमसरिया ने उन्हें प्रेरणा पुरुष बताया। श्री दुर्गाप्रसाद नाथानी ने कहा कि मारवाड़ी अस्पताल में जालान जी के साथ ४-५ साल काम करने का सौभाग्य मिला था, वे हर कार्य पूर्ण समर्पित होकर व सफलतापूर्वक करते थे।

मौन श्रद्धांजलि

पश्चिम बंगाल प्रांतीय सम्मेलन के सचिव श्री रामगोपाल बागला, श्री बसंत नाहटा, श्री सुशील झुनझुनवाला, श्री शंभू चौधरी, श्री पी के लीला, आदि ने जालान जी के अवदानों की चर्चा करते हुए उन्हें त्याग की प्रतिमूर्ति, सच्चा

किये। अंत में दो मिनट के मौन के साथ शोकसभा की समाप्ति हुई।

दोस्त, अपने मुल्क की किस्मत पे रंज़ीदा न हो, इनके हाथों में है पिंजरा, उनके पिंजरे में सुआ।

-- दुष्यंतकुमार

शोक संदेश

निष्काम एवं कर्मठ जीवन

स्व. नन्दकिशोरजी जालान, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के लिये पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी के द्वारा एक शोक-सभा का दिनांक ११ जून २०११ की शाम ४ बजे से पी. एस. धानुका इंग्लिश हॉयर सेकेण्डरी विद्यालय में आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका ने की।

समाज की विभिन्न संस्थाओं व व्यक्तियों ने शोक-सभा में भाग लिया। डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका प्रान्तीय अध्यक्ष, श्री ओमप्रकाशजी चौधरी महामंत्री, श्री सज्जन अग्रवाल, प्रान्तीय कोषाध्यक्ष, श्री कैलाश जी लोहिया, शाखा अध्यक्ष तथा श्री ओमप्रकाशजी खंडेलवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने स्वर्गीय जालान जी के चित्रपट पर माल्यार्पण किया। सभा में डॉ. हरलालका ने जालानजी के निष्काम व कर्मठ जीवन पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए अपने अंतरंग संबंधों का उजागर किया। उनके दो बार राष्ट्रीय अध्यक्षता के कार्यकाल में विधवा-विवाह, सामूहिक विवाह, परिचय सम्मेलन, निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करने के कार्यक्रमों पर विशेष बल दिया। उनके ही कार्यकाल में सम्मेलन की स्वर्ण-जयंती व हीरक-जयंती मनायी गई जिसमें महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह जी तथा हीरक जयंती पर महामहिम राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा ने भाग लिया था।

उनके जीवन पर श्री ललित जी धानुका, शाखा कार्यकारी अध्यक्ष, पवन कुमार सिकरिया, ओमप्रकाश जी खंडेलवाल, श्री अजय अग्रवाल, श्री अशोक मालू एवं श्रीमती शशि शर्मा ने अपने श्रद्धासुमन प्रेषित किये। दिवंगत आत्मा की शांति के लिये तथा संतप्त परिवार को सांत्वना देने के लिये श्री विजय सिंह जी डागा, मंत्री गुवाहाटी शाखा ने एक प्रस्ताव पारित किया उसके पश्चात दो मिनट का मौन रख कर ईश्वर से प्रार्थना की गई। श्री मखनलाल अग्रवाल, श्री अनिल थर्ड, श्री सज्जन अग्रवाल, श्री सीतारामजी बिहानी, श्री कैलाशजी काबरा, श्री परमेश्वरलाल नागौरी, श्री संपत मिश्रा, श्रीमती सरिता देवी भीमसरिया, अनिता अग्रवाल, अध्यक्षा मारवाड़ी युवामंच कामाख्या शाखा, विद्या कुंडलिया, उमराव बोथरा, मधू डागा एवं अन्य सदस्यों ने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका
प्रान्तीय अध्यक्ष, पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन

शोक संदेश

एक विस्मृत योद्धा

प्रवासी मारवाड़ी समाज को एकजुट करने, उनमें चेतना जाग्रत करने एवं कुरीतियों, कुसंस्कारों के विरुद्ध सामाजिक आंदोलन का नेतृत्व करने में श्री जालानजी का अप्रतिम योगदान था। व्यावसायिकता के साथ साथ सामाजिकता के क्षेत्र में भी उन्होंने लंबे समय तक काम किया। सम्मेलन उनकी जिंदगी का मक़सद बन गया था। चाहे पदाधिकारी के रूप में हो अथवा सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' के संपादक के रूप में हो, वे किसी न किसी तरह सम्मेलन को अपना सेवा देते रहे।

१९८२ में जमशेदपुर में सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान श्री जालान को जब वहाँ के स्थानीय मारवाड़ी समाज के लोग जुलूस निकालकर पूरे शहर में घूमा रहे थे तो मैं दंग रह गया, ऐसा भव्य अभिवादन पहले कभी नही देखा था। वह दृश्य आज भी आँखों के आगे घुमता है।

– भानीराम सुरेका
सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय महासचिव

कर्मनिष्ठ प्रहरी

स्वर्गीय जालान जी समाज के उन चिन्तनशील व्यक्तिओ में थे जिन्होने मारवाड़ी समाज तथा सम्मेलन को समय समय पर नयी सोच तथा दिशा प्रदान की। वे सम्मेलन के एक कर्मनिष्ठ प्रहरी थे। उनके निधन पर समस्त मारवाड़ी समाज तथा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को अपूरणीय क्षति हुई है। दीर्घकाल तक विभिन्न पदों पर पूर्ण जिम्मेदारी से अपना उत्तरदायित्व संभालते हुए, उन्होने सम्मेलन को कुशल नेतृत्व दिया। सम्मेलन के कार्यकलायों से अन्त तक अपने को जोड़े रखा। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' का जो वर्तमान रूप हमारे समक्ष है, उसके सम्पादन में उत्कृष्टता लाने में उनका योगदान अतुलनीय था। उन्होने आजीवन निःसन्देह समाज एवं सम्मेलन की पूर्ण निष्ठा से सेवा की। ऐसे कर्त्तव्यपरायण कर्मशील पुरुष की आत्मा को सद्‌गति प्राप्त हो, यही प्रभु से प्रार्थना है।

ओमप्रकाश खण्डेलवाल
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री नन्द किशोर जालान : संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री नन्दकिशोर जालान के पूर्वज लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले राजस्थान के शेखावटी के किसी मय स्वर्णपुरी कहलाने वाले नवलगढ़ से कलकत्ता आए। इनके पितामह का नाम देवीबक्शजी जालान था। उनके छोटे भाई थे जीवनरामजी जालान। नन्द किशोरजी के पिता का नाम जोहारमलजी था। उनका जन्म स्थान नवलगढ़ था।

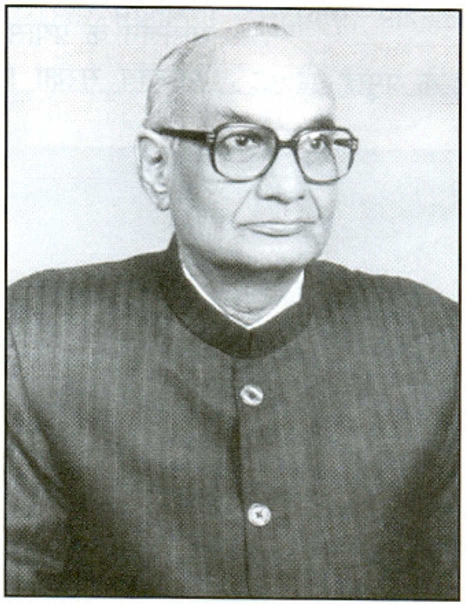

कलकत्ता में मल्लिक स्ट्रीट स्थित काली गोदाम में उस समय के चलन के अनुसार गद्दी लेकर विभिन्न वस्तुओं का व्यापार इनके पितामह करते थे। फर्म का नाम था देवीबख्श जीवनराम। बिड़ला परिवार की गद्दी और इनकी गद्दी एक ही कमरे में आमने-सामने थी। सन् १९१२ में इनके पितामह के स्वर्गवास के बाद इनके पिता ने जीवनराम जुहारमल के नाम से व्यापार शुरू किया। शीघ्र ही यह प्रतिष्ठान कलकत्ता के तत्कालीन बड़े प्रतिष्ठानों में से एक गिना जाने लगा।

हम यहां नन्दकिशोरजी के व्यापारिक पक्ष की चर्चा नहीं करना चाहते बल्कि सामाजिक क्षेत्र में उनके अवदान को रेखांकित करना ही हमारा ध्येय है।

नन्दकिशोरजी का जन्म कलकत्ता में १ सितम्बर, १९२४ को हुआ था। इनके पिता जोहारमलजी जालान एवं पितामह देवीबक्शजी जालान थे। विवाह सन् १९४५ में श्री रामकुमार नेवटिया की पुत्री मालती देवी के साथ, बिना प्रर्दा प्रथा के हुआ। शिक्षा कक्षा ६ तक श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय में तदोपरान्त कक्षा ७ से १० तक हेयर स्कूल में हुई, मैट्रिक की परीक्षा में इन्होंने स्कूल में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। इस स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने वाले कुछ प्रमुख व्यक्तियों में श्री श्रीकृष्णकुमार बिड़ला, श्री बसन्त कुमार बिड़ला, श्री गंगा प्रसाद बिड़ला, श्री श्रीगोपाल खेतान, श्री श्याम सुन्दर कानोड़िया, जस्टिस मुकुल कुमार मुखोपाध्याय आदि शामिल है। बी. काम. विद्यासागर कालेज से (१९४५ में) की। कालेज मैगजीन के सह-संपादक रहे। इनके प्रयास से कालेज मैगजीन में पहली बार हिन्दी के कुछ पृष्ठ जोड़े गये। स्कूली जीवन में प्रिन्स क्लब के अध्यक्ष, इनके द्वारा सार्वजनिक फुटबाल प्रतियोगिता।

मारवाड़ी छात्र संघ : जो १९४०-१९६० के दशकों में पढ़े लिखे लोगों की प्रभावशाली संस्था थी, कोई भी मैट्रिक पास इसका सदस्य बन सकता था। लगभग १८०० सदस्य थे। जालानजी सन् १९४५ में कार्यकारिणी सदस्य चुने गये। सन् १९४६ के भीषण दंगे के बाद मारवाड़ी छात्र संघ की लाइब्रेरी की लगभग १०,००० किताबें हस्तान्तरित इनके द्वारा की गयी। जब शान्ति कायम हो गई तो मारवाड़ी छात्र संघ के चुनाव में १९४७ में ये सर्वसम्मति से सं. मंत्री बनाये गये। इनके मंत्रित्व काल में मारवाड़ी छात्र संघ का वृहत् वार्षिकोत्सव हिन्दुस्तान क्लब में आयोजित हुआ। जिसमैं पश्चिम बंगाल के तत्कालीन गवर्नर श्री सी. राजगोपालाचारी प्रधान अतिथि थे। यह समारोह और उसमें इनकी भूमिका इतनी प्रभावशाली थी कि कलकत्ता में उसकी चर्चा काफी दिनों तक रही।

सन् १९५१ में भीषण प्रतिद्वंद्विता और अपने से प्रमुख व्यक्ति से दो तिहाई से अधिक मत प्राप्त करके मारवाड़ी छात्र संघ के सभापति निर्वाचित हुए। इन्होंने एक वर्ष के कार्यकाल में लगभग ४० कार्यक्रम आयोजित करवाएं। जिसमें मौख्य पार्लियामेंट, फैक्ट्रियों का दिग्दर्शन, लड़ाई के पानी के जहाजों का दिग्दर्शन, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, प्रदर्शनी, विशिष्ट व्यक्तियों के भाषण आयोजित करते रहने के अलावा एक मकान भाड़े पर लेकर नया छात्र निवास प्रारंभ करवा दिया था। राजस्थान छात्र निवास (टाला टैंक के पास) तत्कालीन वार्षिकोत्सव इसी नये छात्र निवास में मनाया गया जिसका उद्घाटन . बंगाल के गवर्नर डा. काजू.... ने किया और उसमें उपस्थित थी नव फिल्म तारिका बीना राय। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कलकत्ता शाखा याने कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन के सन् १९४९ में जालानजी मंत्री नियुक्त किये गये। लगभग एक वर्ष के कार्यकाल में कई आयोजनों के अलावा एक बृहत स्वास्थ्य प्रदर्शनी का आयोजन किया एवं एक स्थानीय अस्ताल में अव्यवस्था के विरुद्ध बुजुर्गों के सहयोग से आवाज उठाई। जिसके कारण वहां के पदाधिकारियों को लगभग ४५,००० रुपये के अपने पक्ष के

नये सदस्य बनाने पड़े और अन्ततः व्यवस्था को सुधारना पड़ा।

१९५० में मात्र २६ वर्ष की आयु में ये अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री पद पर आसीन हुए। उस समय मध्य प्रदेश के वित्तमंत्री बृजलाल सामाजिक सुधारों का कार्यक्रम दृढ़ता से चालू करना चाहते थे। और इनके प्रधानमंत्री पद के चुनाव के पीछे इनके (नंदकिशोरजी) परिवार का सामाजिक सुधारों के प्रति पूर्ण रूपेण पक्षपाती होना भी एक कारण था।

अ.भा.मा. सम्मेलन एक देशव्यापी संस्था, के प्रमुख उद्देश्यः

१. समाज का हर क्षेत्र में सर्वांगीण विकास।
२. समाज सुधार-पर्दा प्रथा, दहेज दिखावा एवं अन्य बेकार की प्रतिबंधता से निष्कासन।
३. व्यापार के अलावा अन्य सभी क्षेत्र में समाज का सजोर पदार्पण।
४. स्त्री शिक्षा पर विशेष प्रयत्न।
५. समाज की सुरक्षा - विभिन्न प्रदेशों में समाज पर समय-समय पर होने वाले सामूहिक आक्रमण से बचाव।
६. राजनीति में पूरी भागीदारी के प्रयत्न

नन्दकिशोरजी के प्रधानमंत्री बनने के साल डेढ़-साल के बाद ही सामाजिक सुधारों का आन्दोलन जोर से चलाया गया। पर्दा प्रथा के विरुद्ध में आन्दोलन कार्यों का दल जिसमें इनके अलावा श्री सीतारामजी सेकसरिया, श्री भंवरमलजी सिंघी आदि अनेक विशिष्ट व्यक्ति एवं महिलाएं सम्मिलित थी द्वारा विवाह स्थानों पर प्रदर्शन किये गये। जिनके दौरान सनातन धर्मियों के साथ हाथा-पाई, पांच सात जगहों पर लाठियों के प्रहार, थूक को फूलों के रस की तरह ग्रहण करना, भरे हाल में पीछे से स्त्रियों के मुंह पर से पर्दा खिंच कर पिट जाने की हिम्मत करना आदि तरीके अपनाये गये। फलस्वरूप १९६० तक कलकत्ता में पर्दा प्रथा लगभग ९० प्रतिशत उठ गई। दहेज के विरुद्ध भी सजोर आवाज उठाई गई।

किसी जमाने में स्त्री शिक्षा को धर्म विरोधी करार दिये जाने की संज्ञा पर काफी बड़ी चोट की गई और स्त्रियों को उच्चतम शिक्षा दिलाने की सजोर आवाज उठाई गई।

सन् १९४५-५० तक समाज का सर्वाधिक अंश केवल व्यापार में संलग्न था। इस स्थिति को घातक बताते हुए हरेक क्षेत्र में समाज के युवकों के प्रवेश का आह्वान किया गया जिसके फलस्वरूप वैज्ञानिक, वकील, डाक्टर, प्रोफेसर आदि हरेक क्षेत्र में प्रवेश करने की समाज के युवकों में अभिलाषा बढ़ी जिसका उदाहरण आज का समाज स्वयं दर्शी है। विभिन्न प्रदेशों में आर्थिक दृष्टि से कुछ अधिक सजोर होने के कारण समय-समय पर समाज को स्थानीय लोगों के सामूहिक हमलों का शिकार होना पड़ा। एक मात्र सम्मेलन के प्रयास से ही राज्य और केन्द्रीय सरकारों द्वारा अविलंब सुरक्षा प्रबंध करने के सफलतापूर्वक आवश्यक कदम उठाये गये। सन् १९५२, १९५४ में सिलीगुड़ी (प.बं.) १९६६-६७ में असम के विभिन्न शहरों में प्रधानतः गौहाटी, ढिबरूगढ़, तिनसुकिया आदि आदि, १९८० में उड़ीसा के दक्षिणी हिस्से से ७० के दशक में मणिपुर में और ९० के दशक में असम में उल्फा द्वारा जो आघात समाज पर किये गये। मणिपुर में नन्दकिशोरजी कर्फ्यू के समय वहां के मुख्यमंत्री के साथ घुमे थे। १९८० में सूचना मिलते ही नन्दकिशोर जी अन्य साथियों के साथ उड़ीसा में पहुंचे और १९९१-९२ से असम में उल्फा द्वारा उत्पन्न स्थिति की सूचनाएं सभी राजनैतिक पार्टियां तक पहुंचाने, केन्द्र द्वारा सशक्त कदम उठाने के भरसक प्रयत्न किये गये जिसका फल १९९४-९५ में सामने आया। अन्य भी अनेक घटनाओं में आवश्यकतानुसार कार्यवाही की गई।

राज्य के भूतपूर्व मुख्यमंत्री ज्योति बसु के साथ सम्मेलन के अध्यक्ष नन्दलाल जालान

राजनीति में सक्रिय भाग लेने के लिए यथासाध्य लोगों को प्रोत्साहित करने और विभिन्न प्रांतों में कुछ अन्य व्यवस्थाएं करवाने में पूरा सहयोग दिया गया।

नन्दकिशोर जी सन् १९५४ में जब सेठ गोविन्ददास जी (सर्वाधिक समय तक सांसद रहे) सम्मेलन के अध्यक्ष बने तथा पुनः सम्मेलन के प्रधानमंत्री चुने गये जिसकी अवधि १९६१ तक रही। पुनः १९७४ में जब श्री भंवरमलजी सिंघी सभापति बने तथा इन्हें पुनः प्रधानमंत्री बनाया गया। सन् १९७९ में सम्मेलन के उपसभापति बने।

सन् १९८२ में जमशेदपुर में हुए अधिवेशन में सभी प्रांतों के एकमत से सम्मेलन के सभापति चुने गये। सम्मेलन के इतिहास में यह तीसरा मौका था जब निर्वाचित सभापति

का जुलूस निकाला गया था और उस जलूस में ९-१० हजार पुरुष स्त्रियों का समूह इनके साथ चल रहा था और ऊपर से पुष्पवृष्टि हो रही थी जो इनके प्रति समाज के लोगों की सद्भावना का प्रतीक था। अपने सभापतित्व काल में उन्होंने देश के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह को सम्मेलन की स्वर्ण जयन्ती के उद्घाटन के लिए बुलाया था और राष्ट्रपति द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। राष्ट्रपति का आगमन समाज के प्रति महत्वपूर्ण माना गया।

सन् १९८६ में जे के ग्रुप के श्री हरिशंकर सिंहानिया सम्मेलन के सभापति बने और सन् १९८९ में पश्चिम बंगाल में राज्य मंत्री रह चुके श्री रामकृष्ण सरावगी सभापति चुने गये। जिसके बाद लगभग ४ वर्षों तक सम्मेलन की गतिविधियों में ठहराव आ गया, कारण कुछ व्यक्तियों ने सम्मेलन को हाईकोर्ट के कटघरे में खड़ा कर दिया था। सन् १९९८ में पुनः सभी प्रान्तों द्वारा एक मत से नन्दकिशोर जी को सम्मेलन का सभापति निर्वाचित किया गया। सन् १९९७ में वही क्रिया पुनः दोहराई गई। सन् १९९३ से मई २००१ तक अपने ८ वर्ष के सभापतित्व काल में इन्होंने सम्मेलन को एक नया मोड़ दिया। इस अवधि में इन्होंने पुनः भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा को बुलाकर सम्मेलन की हीरक जयंती का उद्घाटन करवाया। इस अवसर पर डॉय शंकर दयाल शर्मा ने जो भाषण दिया, वह स्वर्णक्षरों में लिखा जाने जैसा हुआ और उस औलोकिक भाषण में मारवाड़ी समाज द्वारा हर क्षेत्र में और विशेषकर स्वतंत्रता संग्राम में समाज की अवर्णित योगदान का जिक्र किया और उसे स्वीकारा। इस अवधि में सम्मेलन के अंतर्गत इन्होंने विवाह योग्य युवक युवतियों के परिचय सम्मेलन और सामूहिक विवाह की लगभग पांच बहुत ही शक्तिशाली कार्यक्रम सम्मेलन की विभागीय समिति, महिला समिति द्वारा आयोजित करवाई। इनकी सफलता के कारण अन्य संस्थाओं ने यह कार्यक्रम अपनाया जो दहेज पर एक करारी चोट थी। समाज की उद्यमी महिलाओं के उत्पादों की प्रदर्शनी के लगभग ७ आयोजन किये गये। और उनमें महिलाओं को उस प्रवृत्त होने की प्रेरणा जगाने का प्रयत्न किया गया। लातूर-भूकंप में ३५००० रु. और उत्कल के तूफान में १,४५,०००/- रु. की सांकेतिक सहायता श्री रामकृष्ण मिशन की दी गई एवं राजस्थान के पिछले वर्ष के अकाल में १५,०००००/- रु. और गुजरात के भूकम्प में लाखों रुपयों को सहायता दी गई। विभिन्न प्रादेशिक सम्मेलनों की दी गई सहायताएं इसके अतिरिक्त रही। अन्य कार्यों में वधू दहेज के विरोध में सशक्त आन्दोलन, वनवासी क्षेत्र में एक शिक्षक स्कूल कार्यक्रम में सहायता, प्रादेशिक भाषाओं के साहित्यकारों का सम्मान आदि शामिल है। इनमें ४ प्रांतों में शिक्षा कोष द्वारा हर वर्ष जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति, कम्प्यूटर शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति जयपुर में आयोजित राजस्थानी कन्क्लेव में योगदान आदि अनेकानेक कार्यों में नंदकिशोरजी का मार्ग दर्शन और सहभागिता की अपनी अलग कहानी है।

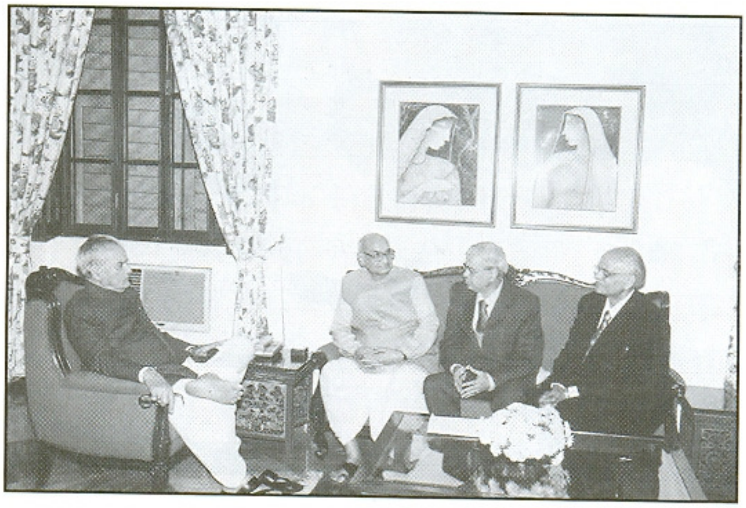

उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत के साथ नन्दकिशोर जालान, सीताराम शर्मा एवं हरिप्रसाद कानोड़िया

सम्मेलन की मासिक पत्रिका 'समाज विकास' का प्रकाशन नन्दकिशोरजी की चेष्टा से सन् १९५८ में प्रारंभ किया गया था जो देश के कोने-कोने में हजारों की संख्या में पहुंचती है। इसके संपादन में प्रारंभ से अब तक इनका प्रमुख हाथ रहा है। सन् १९५४ के सम्मेलन के अधिवेशन में 'परिवार नियोजन' संबंधी प्रस्ताव पारित हुआ था। इसके अत्यधिक विरोध के बावजूद इसके समर्थन में जिन्होंने मुख्य भूमिका निभाई उनमें नन्दकिशोरजी प्रमुख थे।

सम्मेलन के छठवें प्रादेशिक सम्मेलनों के अधिवेशन पिछले दो वर्षों में हुए-पश्चिम बंगाल प्रादेशिक, पूर्वोत्तर प्रदेश (असम व अन्य जुड़े हुए छह प्रांत), उत्कल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र प्रदेश। मध्य प्रदेश अधिवेशन में ये नहीं जा सके, अन्य सभी प्रादेशिक अधिवेशनों में इनकी अहम् भूमिका रही। आप मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन, जिसे इन्होंने सन् १९८५ में प्रारंभ किया, के अध्यक्ष भी हैं।

कलकत्ता चेम्बर आफ कामर्स : सन् १८३० में स्थापित, जिसका पश्चिम बंगाल विधानसभा में सन् १९५० तक प्रतिनिधित्व था। सन् १९६५ के आसपास खस्ता हालत में

आ गया था। सन् १९७० में नन्दकिशोरजी इसके अध्यक्ष बनाये गये। उस समय इसके कुल ३५ सदस्य थे, सन् १९७०, १९७१, १९८०, १९८१ में ये इसके सभापति रहे। नन्दकिशोरजी और उनके सहयोगियों के प्रयास से चेम्बर ने पुनः द्रुतगति से प्रगति की, आज इसके लगभग ४०० सदस्य हैं एवं कलकत्ता के प्रमुख चेम्बरों में इसकी गिनती हैं।

श्री विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल : स्थापित सन् १९२०। श्री राधाकृष्णजी कानोड़िया की प्रेरणा से आप सन् १९७३ से १९७५ तक सत्यनारायणजी टांटिया के साथ मंत्री बनाये गये थे। उस समय अस्पताल में आधुनिक आवश्यकतानुसार कई कमियां थी। कानोड़िया जी के प्रयत्न से माधो प्रसाद जी बिड़ला द्वारा संचालित 'बेलव्यू नर्सिंग होम' के प्रमुखतम डाक्टरों के सहयोग से एक्स-रे, पैथोलॉजी आदि विभागों का नवीनीकरण करवाया गया एवं नई मशीनें खरीदवा कर लगाई गई।

सन् १९८७ में पुनः राधाकिशन जी कानोड़िया के आग्रह पर ये मंत्री बने। उस समय अस्पताल में लगभग १५ से २० लाख रुपये प्रतिवर्ष घाटा चलता था तथा अन्य भी कुछ विशेष असुविधायें हो रही थी। इनके प्रयत्न से ५० नये केबिन बनाये गए एवं १० डीलक्स केबिन बनाये गए। कुछ नामी डाक्टरों को जोड़ा गया। सन् २००० में इन्हें उप-सभापति व डेवलपमेन्ट कमेटी का चेयरमैन बनाया गया जिसके बाद से पुनः पिछले वर्षों में उभरी हुई कमियों को सुलझाने का क्रम आरंभ हुआ।

पोद्दार छात्र निवास : सन् १९३५ में मारवाड़ी छात्र निवास के नाम से प्रारंभ किये गये एवं सन् १९५० के आसपास नाम बदल कर पोद्दार छात्र नवास के नाम से परिचित बाहर से आये हुए शिक्षारत छात्रों के हितार्थ, इनकी शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी के साथ जुड़ा रहा हलवासिया छात्र निवास। प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका (भारत के संविधान के हस्ताक्षरकर्त्ता और जिनके विशेष प्रयत्नसे यह प्रारंभ हुआ था) इसके आजीवन अध्यक्ष रहे। सन् १९७८ में उनके विशेष आग्रह पर नन्दकिशोरजी ने इसका मंत्रीपद स्वीकार किया। उस समय इनमें रहनेवालों में लगभग २५ प्रतिशत व्यक्ति छात्र नहीं थे एवं व्यवसायी थे। काफी कठिनाई से उन्हें छात्र निवास से हटाया गया, मात्र सिफारिश के आधार पर छात्रों की भर्ती बंद की गई और वातावरण में परिवर्तन आया। सन् १९९२ के आसपास प्रभुदयालजी के स्वर्गवास के बाद नन्दकिशोरजी को इसका अध्यक्ष बनाया गया जो अब तक जारी था।

राजस्थान के उप-मुख्यमंत्री श्री हरिशंकर भामरा के साथ जालान जी एवं उनके सहयोगी सीताराम शर्मा, इन्द्रचन्द संचेती एवं स्व. लोकनाथ डोकानिया।

संगीत ज्योत्सना : राधाकृष्ण जी नेवटिया (नवलगढ़) के प्रयत्न से बड़ाबाजार से संयुक्त इलाके में यह संस्था टांटिया हाई स्कूल के एक कक्ष में स्थापित की गई थी। स्थानीय घरों में संगीत, नृत्य, चित्रकला का प्रचार-प्रसार और उसके प्रति अभिरूचि पैदा करना इसका प्रधान उद्देश्य था। सन् १९८० के आसपास राधाकृष्णजी ने नन्दकिशोरजी को इसकी कमेटी का सदस्य बनाया और उनके स्वर्गवास के बाद एकमत से इन्हें सभापति बनाया गया। संस्था अपने उद्देश्यों की पूर्ति में निरन्तर प्रयासशील रही है।

श्री नवलगड़ विद्यालय : सन् १९८० के आसपास नन्दकिशोर जी को इसकी कलकत्ता कमेटी का सदस्य बनाया गया। सन् १९८५ में आर्थिक कठिनाई पर विचार-विमर्श के अन्तर्गत इनका सुझाव कि महिला कालेज प्रारंभ करने की योजना ली जाए और अर्थ संग्रह किया जाये, स्वीकारा गया तथा नन्दकिशोर जी को ही इसके पूरे प्रबंध व प्रयास का अगुवा बनाया गया। ईश्वरीय कृपा से कोलकाता, मुंबई, नागपुर, मिदनापुर आदि स्थानों के प्रयत्न से लगभग २० लाख रुपये एकत्रित हुए। जालान परिवार द्वारा नव-निर्मित कमरों में महिला कालेज प्रारंभ की गई तथा विद्यालय की हीरक जयंती पर नवलगढ़वासियों का भव्य समारोह किया गया। संग्रहीत रकम में लगभग रु. १६ लाख बचे। कलकत्ता कमेटी के आगानी चुनाव में एक विशेष व्यक्ति के अनुरोध पर श्री शुभकरणजी जालान के बदले श्री विजयनन्दन पाटोदिया को मंत्री बनाया गया।

सन् १९९८ में विद्यालय की आर्थिक स्थिति विकट हो गई एवं दानदाताओं से अर्थ संग्रह अत्यधिक कठिन व प्रायः असंभव सा हो गया। श्री विजयनन्दजी पाटोदिया, श्री श्रीलालजी क्याल आदि कुछ लोगों ने नन्दकिशोरजी को अध्यक्ष पद स्वीकार कर स्थिति को वापस ठीक करने का अनुरोध किया जिसे नन्दकिशोरजी ने स्वीकारा और नई कमेटी बनाई गई। पिछले तीन वर्षों की प्रगति की कहानी स्थानीय व्यक्ति अच्छी तरह जानते हैं। छात्राओं की संख्या मे वृद्धि हुई एवं घाटे ने मुनाफे का स्थान लिया। महिला कालेज में स्नाकतोत्तर याने एम.ए. की पढ़ाई प्रारंभ कर दी गई एवं स्कूल व कालेज में सन् २००० में कम्प्यूटर शिक्षा भी सभी कक्षाओं में प्रारंभ की गई। कालेज भवन में छात्राओं की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखकर गत वर्ष जालान परिवार ने चार नये कमरों का निर्माण करवाया तथा शीघ्र ही कालेज में विज्ञान व अन्य कुछ विषयों की शिक्षा प्रारंभ करने की योजना इस बीच हाथ में ली गई।

भ्रष्टाचार! भ्रष्टाचार! भ्रष्टाचार!

– संतोष सराफ
महामंत्री,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पिछले कुछ समय से देश में भ्रष्टाचार को लेकर हो रहे आंदोलनों और आंदोलनों से निपटने के लिए सरकार द्वारा अपनाए जा रहे तरीकों के बाद अब एक बात बिल्कुल साफ होती दिख रह है कि अगर सचमुच में भ्रष्टाचार से लड़ना है, इसे उखाड़ फेंकना है, तो नीचे से ऊपर तक इसका पुरजोर विरोध करना होगा। समाज के सभी वर्गों के लोगों को समझना होगा कि भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंके बगैर स्वस्थ समाज की रचना नहीं की जा सकती है। मारवाड़ी समाज को भी इसी तर्ज में चिंतन करना होगा और भ्रष्टाचार से निपटने के लिए खड़े होना होगा। दरअसल जब तक समाज में भ्रष्टाचार के खिलाफ चिंतन धारा नहीं प्रवाहित होगी और वैचारिक स्तर पर जंग नहीं छेड़ी जाएगी, तब तक इसे खत्म करना नामुमकिन सा हो गया है। जब पूरे देश में भ्रष्टाचार की चर्चा हो रही है, ऐसे परिवेश में हमारे समाज को भी इसके खिलाफ सभी स्तरों पर आवाज उठानी होगी।

> **एक समय था जबकि बच्चों को बचपन से ही बताया-समझाया जाता था कि झूठ बोलना पाप है, चोरी नहीं करनी चाहिए, बेईमानी नहीं करनी चाहिए, इसके नतीजे बहुत खराब होते हैं। अब समय आ गया है जबकि हम सबको अपने बच्चों को भ्रष्टाचार के खिलाफ बताना-समझाना होगा, ताकि नीचे से लेकर ऊपर तक सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता पैदा हो सके। घर-घर में, जन-जन में इसके खिलाफ आवाज उठाने और जनजागरण अभियान चलाने की जरूरत है।**

भ्रष्टाचार एक बार फिर सुर्खियों में है. इस बार घोटालेबाजों और उनके कारनामों के कारण नहीं बल्कि इस पर लगाम लगाने की मांग के साथ हो रहे धरना-अनशन आंदोलनों की वजह से. कुछ दिनों पहले समाजसेवी अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार से निबटने की 'रामबाण दवा' के बतौर लोकपाल के गठन की मांग के साथ संसद के पास जंतर मंतर पर आमरण अनशन शुरू किया था. उन्हें दिल्ली और देश के अन्य हिस्सों से मिले समर्थन के कारण आईपीएल से लेकर राष्ट्रमंडल खेलों के आयोजन, आदर्श फ्लैट आवंटन और फिर जी स्पेक्ट्रम आवंटन घोटालों के एक-एक कर उजागर होते जाने से घबराई सरकार एक तरह से हिल सी गई थी.

आनन-फानन में लोकपाल विधेयक लाने और उसका मसौदा तैयार करने के लिए सरकार और अन्ना हजारे के साथ लगे सामाजिक कार्यकर्ताओं, विधि वेत्ताओं को लेकर एक संयुक्त समिति बना दी. अपने गठन के समय से ही विवादों में घिर गई यह समिति फिलहाल लोकपाल विधेयक के प्रावधानों पर आम राय बनाने में जुटी है.

बाबा रामदेव भी एक अरसे से योग और प्राणायाम के जरिए लोगों को स्वस्थ और निरोग बनाते-बनाते देश को भी भ्रष्टाचार के रोग से मुक्त करने के अभियान में लगे रहे हैं. प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया की सुर्खियों से अघाए बाबा का देश और विदेश में भी समर्थन आधार काफी बड़ा है. लेकिन भ्रष्टाचार के विरोध के मामले में उन्हें लगा कि वह और उनका भारतीय स्वाभिमान आंदोलन पिछड़ से गए. ना नुकुर के स्वर में अन्ना का समर्थन करते हुए भी उन्हें लगा कि अलग से कुछ किया जाना चाहिए. लिहाजा रामलीला मैदान में पूरी तैयारी के साथ आकर जम गए. मंच पर जमने से पहले और बाद में भी बुलावे पर वह सरकारी प्रतिनिधियों से मिलने बात करने को तुरंत तैयार हो गए. उन्हें मनाने-समझाने, ठगने और उनसे निबटने में सरकार को उतनी देर भी नहीं लगी जितनी अन्ना को मनाने में लगी थी.

आखिर कौन वह व्यक्ति, सरकार और संगठन होगा जो भ्रष्टाचार मिटाने के सवाल पर राजी नहीं होगा और कौन ऐसा देशवासी होगा जो नहीं चाहेगा कि देश में अथवा विदेश में जमा कालाधन बाहर आए. लेकिन क्या सिर्फ इस तरह के आंदोलनों और उनसे निबटने के आश्वासनों, फौरी उपायों से ही भ्रष्टाचार मिट जाएगा और कालाधन बाहर आ जाएगा. इसका मतलब यह कतई नहीं कि भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन नहीं होने चाहिए. इन आंदोलनों ने यकीनन भ्रष्टाचार के खिलाफ देश व्यापी माहौल तो बनाया ही है. भ्रष्टाचार के फेर में फंसे-उलझे जन दबाव कहें या फिर राजनीतिक मजबूरी, सरकार भी इस पर अंकुश लगाने के प्रयासों में साझा करने की बात तो करने ही लगी है. लेकिन हमने भ्रष्टाचार के विरुद्ध जयप्रकाश नारायण का आंदोलन और फिर उस आंदोलन से निकलकर सत्तारूढ हुए अधिकतर लोगों के चाल-चरित्र और चेहरों को बदलते भी देखा है.

Experience Security

BCL Secure Premises Pvt. Ltd. (BCL SP) is a leading Integrated Security Solutions provider that maintains a Pan India presence . Aimed at providing world class security solutions to its clients, BCL SP is an **ISO 9001:2000** certified organisation with a constant endeavour to upgrade the quality of its resources and infrastructure. Our scope of work includes:

- Guarding Solutions including a range of specialisations such as Hotel Guards, Mall Guards, Hospital Security, PSOs etc
- Electronic Security Services
- Facility Management Services
- Blast Effect Protection and Mitigation
- Maritime Security Services
- Investigations
- Canine (K9) Services
- X-Ray Systems
- Intelligent Evacuation Systems
- Fire Prevention / Protection
- ESCAPE Rescue Systems for high rise buildings
- Training
- Consultancy Services

BCL SP has on board security specialists who have headed premier security agencies in Government (MHA) and armed forces of the nation. At BCL SP, it is our endeavour to understand the unique security needs of each client, and to fulfill these utilising the latest technology and expertise. We are emerging as one of the most competitive service providers in physical and technical security.

BCL SP can take up projects on a turn key basis right from conception to final execution. We also provide solutions on **Lease Basis**.

Global Strategic Partners and Alliances

DiagNose
EMESCO Emergency & Security Solutions
ESCAPE Rescue Systems
GILARDONI
KCA
VERINT Powering Actionable Intelligence

bclsecurepremises

ISO 9001:2000 Certified

Please feel free to contact us at

222, Mall Road
Flower Valley, Vasant Kunj
New Delhi - 110070

Ph: +91 11 261 23514
Fax: +91 11 26123816
Toll Free: 1800 118 383

Or email us at: info@securepremises.com

www.securepremises.com

© Copyright BCL Secure Premises Pvt. Ltd. 2010

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में

वैवाहिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में धन प्रदर्शन एवं फिजूलखर्ची पर चिन्ता

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा समाज सुधार प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की दूसरी बैठक १४ जून २०११ को हिन्दुस्तान क्लब के बोर्ड रुम में सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

सम्मेलन के स्तंभ पुरुष स्वर्गीय नंदकिशोर जालान की आत्मा की शांति हेतु दो मिनट के मौन के पश्चात् बैठक की शुरुआत हुई। इस अवसर पर अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने सम्मेलन में युवाओं एवं महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पर जोर देते हुए कहा कि संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए अधिक से अधिक संख्या में नए सदस्य बनाये जाए। एक मजबूत सम्मेलन की संकल्पना तभी की जा सकती है, जब नए सदस्य संगठन से जुड़ते रहेंगे। उन्होंने महिला व युवा उपसमिति बनाने पर भी जोर दिया।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि समाज सुधार अत्यन्त जरुरी है। इसके लिए 'भय बिनु होत न प्रीत' की दुहाई देते हुए उन्होंने कुछ प्रभावशाली कदम उठाने के सुझाव दिये। यह तय हुआ कि देशभर के संतों व

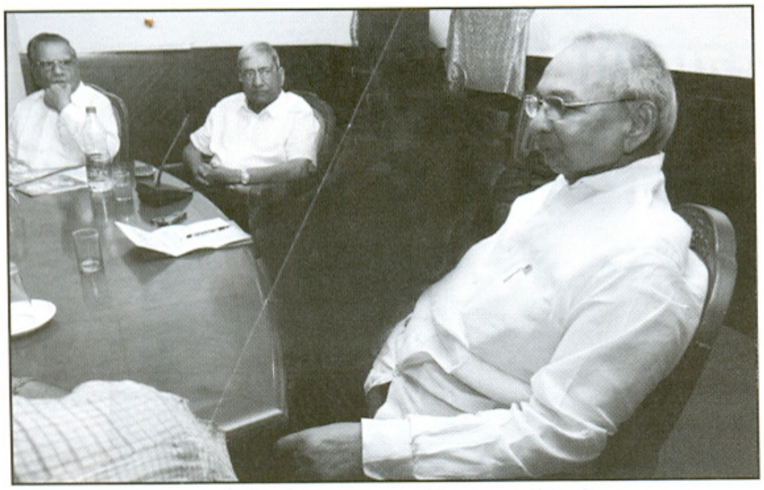

समाज सुधार समिति के अध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर सराफ व कार्यकारिणी सदस्य श्री हरिप्रसाद बुधिया ने कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखें साथ में है पूर्व महामंत्री श्री भानीराम सुरेका।

श्रीमती उमा सराफ अपनी बात रखते हुए, साथ में परिलक्षित है श्री नन्द किशोर अग्रवाल एवं श्री शम्भु चौधरी।

कथावाचकों से सम्मेलन अपील करेगा कि वे अपने प्रवचनों के दौरान भक्तों से सादगी बरतने का अनुरोध करें।

श्री नवल जोशी ने धार्मिक आयोजनों में दिनों-दिन बढ़ रहे प्रदर्शन, दिखावे एवं फिजूलखर्ची को रोकने का प्रस्ताव रखा।

श्रीमती उमा सराफ ने कहा कि आजकल धार्मिक आयोजनों में लाखों की राशि खर्च की जाती है, इस राशि को समाज सुधार के कार्य में खर्च करने से लोगों का अधिक भला होगा।

श्री हरिप्रसाद बुधिया के प्रस्ताव पर नीमतल्ला घाट के सौंदर्यीकरण पर चर्चा हुई एवं तय हुआ कि इसके लिए सम्मेलन कोलकाता नगर निगम के मेयर व उच्चाधिकारियों से बातचीत करेगा।

इससे पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने विगत दिनो किये गए कार्यो का ब्यौरा प्रस्तुत किया तथा बंगाल की नयी सरकार में समाज को प्रतिनिधित्व दिये जाने का प्रस्ताव दिया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने आय-व्यय का ब्यौरा दिया।

इस अवसर पर स्व. जालान की मृत्यु से खाली हुए परामर्शदाता उप-समिति के अध्यक्ष पद के लिये श्री सीताराम शर्मा के प्रस्तावित नाम को सर्वसम्मति से पारित किया गया। बैठक में पूर्व अध्यक्ष श्री मोहन लाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया, छत्तीसगढ़ से पधारे श्री संतोष अग्रवाल, संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका व श्री कैलाशपति तोदी, पूर्व महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, डॉ. जुगल किशोर सराफ, श्री नारायण प्रसाद माधोगड़िया, श्री ईश्वरी प्रसाद टांटिया, श्री बालकृष्ण मूंधड़ा, श्री श्याम सुंदर अग्रवाल, श्री चम्पालाल सरावगी, श्री नंद किशोर अग्रवाल, श्री श्यामलाल डोकानिया, श्री बाबुलाल धनानिया, श्री गोविंद केजड़ीवाल, श्री रवीन्द्र लडिया, श्री बालकृष्ण माहेश्वरी आदि उपस्थित सदस्य ने विचार विमर्श में भाग लिया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं पूर्व मेयर रायपुर श्री संतोष अग्रवाल, वक्तव्य रखते हुए। साथ में परिलक्षित हैं उपाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया।

ALL INDIA MARWARI FEDERATION

NATIONAL STANDING COMMITTEE (2011-2013)

NATIONAL OFFICE-BEARERS

Sri Hari Prasad Kanoria
National President

Sri Ram Awtar Poddar
National Vice President

Sri Badri Pd. Bhimsaria
National Vice President

Sri Santosh Agarwal
National Vice President

Sri Ram Kr Goyal
National Vice President

Sri Ramesh Chand Gopikishan Bang
National Vice President

Sri Om Prakash Khandelwal
National Vice President

Sri Santosh Saraf
National General Secretary

Sri Atmaram Sonthalia
National Treasurer

Sri Sanjay Harlalka
Joint General Secretary

Sri Kailash Pati Todi
Joint General Secretary

SUB COMMITTEE CHAIRMEN

Sri Sitaram Sharma
Chairman-advisory Sub-committee

Sri Prahlad Rai Agarwal
Chairman, Higher Education

Dr. Jugal Kishore Saraf
Chairman, Samaj Sudhar

Sri Dwarika Prasad Dabriwal
Chairman, Building

Sri Nandkishore Agarwal
Chairman, Rajnitik Chetna

Sri Kamal Nopani
Chairman, Sangathan Sub Committee

Sri Nand Lal Singhania
Chairman,Constitution Amendment

Sri Ratan Shah
Chairman, Rajsthani Bhasha Sub-committee

Smt Bimla Dokania
Coordinator Mahila Sub Commiittee

Sri Ravindra Kumar Ladia
Chairman, Directory

Sri Biswanath Bhuwalka
Chairman, Membership

Sri Kailash Pati Todi
Coordinator Yuva Sub Commiittee

MEMBERS

Sri Vishwanath Saraf
Sri Om Ladia
Sri Mukund Rathi
Sri Omprakash Agarwal
Sri Gopi Ram Dhuwalia
Sri Govind Pd Sharma
Sri Krishna Kr. Dokania
Sri Prem Chand Surelia
Sri Bishnu Tulsian

Sri Dilip Kumar Goenka
Sri Ramniwas Sharma
Sri Pradip Dhedia
Sri Subhash Murarka
Sri Govind Pd. Agarwal
Sri Dungarmal Sureka
Sri Bishnu Poddar
Sri Praveen Kr. Baid
Sri Bishwanath Singhania

Sri Jaigovind Indoria
Sri Rajesh Kumar Poddar
Sri Manoj Kr. Agarwal
Sri Kantichandra Goenka
Sri Vinod Kr. Saraf
Sri Dinesh Kumar Jain
Sri Pramod Kumar Goenka
Sri Manmohan Garodia
Sri Manish Dokania

ALL INDIA MARWARI FEDERATION

LIST OF SUB COMMITTEE (2011-13)

ADVISORY SUB COMMITTEE

Sri Sitaram Sharma
Chairman
Sri Hanuman Prasad Sarawagi
Shri Hari Shankar Singhania

Sri Mohanlal Tulsian
Sri Nandlal Rungta
Sri Ratan Lal Shah

Sri Bhani Ram Sureka
Sri Ram Awatar Poddar

BUILDING SUB COMMITTEE

Sri Dwarka Prasad Dabriwal
Chairman
Sri Sita Ram Sharma
Sri Nandlal Rungta
Sri Hari Prasad Budhia
Sri Radhey Shyam Agarwala

Sri Prahladrai Agarwal
Sri Banwari Lal Soti
Sri Sarwan Kumar Todi
Sri Ravindra Chamaria
Sri Sajjan Bhajanka

Sri Biswambher Dayal Sureka
Sri Ishwari Prasad Tantia
Sri Ram Awtar Poddar
Sri Vijay Kumar Gujarwasia

HIGHER EDUCATION SUB-COMMITTEE

Sri Prahlad Rai Agrawal
Chairman
Sri Sita Ram Sharma
Sri Nandlal Rungta
Sri Radhey Shyam Goenka
Dr Chiranjee Khandelwal

Sri Ramnath Jhunjhunwala
Sri Dwarka Prasad Dabriwal
Sri Harikishan Choudhary
Sri Sajjan Bhajanka

Sri Rajendra Bachhawat
Sri Bishambhar Dayal Sureka
Sri Shyam Lal Dokania
Sri Shyam Sunder Beriwal

CONSTITUTION SUB COMMITTEE

Sri Nand Lal Singhania
Chairman
Sri Sita Ram Sharma
Sri Nandlal Rungta
Sri Ramesh G. Bang

Sri Govind Prasad Dalmia
Sri C.k. Jain
Sri Ratan Lal Shah
Sri Onkarmal Agarwal

Sri Kamal Nopani
Sri Surendra Lath
Dr. Sri Shyam Sundar Harlalka
Sri Rampal Agarwal 'Nutan'

DIRECTORY SUB COMMITTEE

Sri Ravindra Kumar Ladia
Chairman
Sri Babulal Dhanania
Sri Bimal Chowdhary
Sri Satish Deora

Sri Bal Kishan Maheshwari
Sri Pradeep Dhedhia
Sri Dilip Goenka
Sri Chitranjan Choudhray

Sri Kailashpati Todi
Sri Rajendra Khandelwal
Sri Pankaj Banka
Sri Shiv Kumar Lohia

MEMBERSHIP SUB COMMITTEE

Sri Biswanath Bhuwalka
Chairman
Sri Puranmal Tulsian
Sri Biswanath Saraf
Sri Biswanath Singhania

Sri Pawan Kumar Lilah
Sri Bhagwati Prasad Jalan
Sri Dharamchand Agarwal
Sri Ramgopal Bagla

Sri Ramniwas Sharma
Sri Mukund Rathi

RAJASTHANI BHASHA SUB-COMMITTEE

Sri Ratan Lal Shah
Chairman
Sri Nandlal Rungta
Sri Mahesh Jalan
Sri Radheshyam Agarwal
Sri Bishwanath Marothia
Sri Nawal Joshi
Sri Shambhu Choudhary
Sri Shiv Kumar Lohia
Sri Jugal Kishore Jaithalia
Sri Shyam Sunder Bagaria
Sri Nathmal Kedia
Sri Prahlad Rai Agarwal

RAJNAITIK CHETNA SUB COMMITTEE

Sri Nand Kishore Agarwal
Chairman
Sri Sita Ram Sharma
Smt. Meenadevi Purohit
Sri Santosh Agarwal (Raipur)
Sri Omprakash Poddar
Sri Shambhu Choudhary
Sri Jugal Kishor Jaithilia
Sri Onkarmal Agarwal (Gauati)
Sri Shishir Kr Bajoria
Sri Ram Pal Agarwal Nutan (Patna)
Sri Narayan Jain
Sri Kamal Gandhi
Sri Dilip Kr. Mansukhlal Gandhi (Maharashtra)
Sri Binod Kumar Agarwal (Jharkhand)
Sri Surendra Lath (Orissa)
Sri Shantilal Jain
Sri Sanjay Harlalka
Sri Raj K. Purohit (Mumbai)

SAMAJ SUDHAR SUB COMMITTEE

Dr Jugal Kishor Saraf
Chairman
Sri Sitaram Sharma
Sri Nand Lal Rungta
Sri Hari Prasad Budhia
Sri Prahlad Rai Agarwal
Sri Ishwari Pd. Tantia
Sri Madanlal Bamlawa
Sri Ram Pal Agarwal Nutan
Sri Basudeb Pd Budhia
Sri Deen Dayal Gupta
Sri Nemichand Poddar
Sri Pushkarlal Kedia
Vijay Kumar Gujarwasia
Smt Uma Saraf
Sri Prahalad Rai Goenka
Sri Satish Deorah
Sri Onkarmal Agarwal
Sri Chiranjee Lal Agarwal
Sri Vishwanath Kedia

SANGATHAN SUB COMMITTEE

Sri Kamal Nopani
Chairman
Sri Sita Ram Sharma
Sri Nandlal Rungta
Sri Mukund Das Maheswari
Sri Som Prakash Goenka
Sri Ram Awtar Poddar
Sri Balram Sultania
Sri Atmaram Sonthalia
Sri Maujiram Jain
Sri Vijay Kumar Manglunia
Sri Kailash Mal Dugar
Sri Shyam Sunder Soni
Sri Basant Mittal
Sri Lalit Gandhi
Sri Bishwanath Marothia
Sri Ramesh Kumar Bang
Sri Satyanarayan Sharma

MAHILA SUB COMMITTEE

Smt Bimla Dokania
Coordinator
Smt Ruchika Gupta
Smt Rachna Nahata
Smt Sushma Agarwal
Smt Uma Saraf
Smt Jayshree Tulsian

YOUTH SUB COMMITTEE

Sri Kailash Pati Todi
Coordinator
Sri Sanjay Harlalka
Sri Om Prakash Agarwal

* President and General Secretary of All India Marwari Sammelan will be Ex-Officio member of all Sub-committee.

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

परोपकारी मारवाड़ी समाज.......

– परमजीत नायडू

(गतांक से आगे......)

अगर बड़ाबाजार को सही ढंग से जानना है तो बड़ाबाजार थाना को केन्द्र बिन्दु बनाकर उत्तर की ओर मुंह करके खड़े होजाए। पोजिटिव एनर्जी का गढ़ बड़ाबाजार (कलकत्ता) क्या है स्वयं अनुभूति होने लगेगी। 'चारों धाम' या 'द्वादश ज्योतिर्लिगों' के दर्शनार्थ कलकत्ता छोड़कर तीर्थ स्थलों का भ्रमण करना तब आवश्यक नहीं होगा। किसी भी कारण से धार्मिक स्थलों में कोई भी व्यक्ति जाने में असहाय रहा तो उस व्यक्ति को मन मारकर पश्चाताप करने की जरूरत नहीं। जिस तरह भगवान शिव की जटा में गंगा का वास है ठीक उसी तरह मारवाड़ी समाज ने अपने धर्म परायण सामर्थ्य से सभी देवी-देवताओं को बड़ाबाजार (कलकत्ता) और इसके इर्द-गिर्द बसा दिया है। वैसे तो भगवान का असली वास इन्सान के मन मंदिर में ही होता है पर परोपकार की दृष्टि से मारवाड़ी समाज ने आम जनता की सेवार्थ काफी मंदिरों का निर्माण किया है। हर वर्ष प्रायः सब देवताओं का अनुष्ठान ऋतु और मास अनुसार नियमित रूप से मारवाड़ी समाज आयोजित करता है। 'जीण माता' का भी भव्य आयोजन करते हैं। बड़ाबाजार ही ऐसा स्थल है जहां विभिन्न धर्मों के मंदिर सिर्फ दो-तीन किलोमीटर से भी कम दूरी पर दो-तीन शताब्दियों से भी ज्यादा समय से स्थापित है। कॉलेज स्ट्रीट का ठंठनिया काली मंदिर पांच (५००) सौ साल पुराना है जबकि कालीघाट का काली मंदिर सिर्फ ३५० साल पुराना है। बड़ाबाजार थाना से उत्तर की तरह मुंह करके सभी मंदिरों को गिना जा सकता है। बड़ाबाजार के उत्तर-पश्चिम में नीमतल्ला घाट का प्रसिद्ध बाबा भूतनाथ मंदिर है। पश्चिम में हुगली गंगा प्रवाहित होती हैं। इसी दिशा में अनगिनत मंदिर हैं जैसे राजा कटरा का पंचमुखी हनुमान मंदिर, काली मंदिर, नरसिंह मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, सांवरियाजी का मंदिर और उसके ठीक सामने मुस्लिम समाज की मजार और शनि मंदिर। उत्तर पश्चिम में महर्षि देवेन्द्र रोड पर गणेशजी का आदिमंदिर है। थाना के पश्चिमी तरफ कलकत्ते का ही नहीं बल्कि पूरे पूर्वोत्तर बंगाल का सबसे बड़ा सिखों का गुरुद्वारा है। कलाकार स्ट्रीट में दो प्राचीन जैन मंदिर एवं जग विख्यात चमत्कारी सत्यनारायणजी का मंदिर है। साथ में लक्ष्मी नारायण मंदिर और हनुमान मंदिर भी वहीं हैं। बांगड़ परिवार द्वारा निर्मित भगवान वैकुंठनाथ का मंदिर है। उत्तर पूर्व में दादी सती और लक्ष्मी जी का मंदिर हैं। बांस तल्ला मैं 'श्रीनाथजी' और 'बलदेवजी' का मंदिर हैं जिन्हें मारवाड़ी गुजराती समुदाय 'हवेली' के नाम से सम्बोंधित करते हैं। उत्तर पूर्व बेलगछिया में दिगम्बरों का विशाल जैन मंदिर है, मानिकतल्ला में श्वेताम्बरों का 'दादा बाड़ी' नामक विख्यात मंदिर है जिसे सेठराज बहादुर बद्रीदास झवरी ने बनवाया था। सिर्फ तीन हजार रुपयों के चन्दा मात्र से दादा बाड़ी के धर्मशाला हॉल में जैन समुदाय का कोई भी परिवार वहां शादी रचा सकते हैं। बड़ाबाजार के दक्षिण में तीन-चार चर्च हैं। दक्षिण पूर्व में 'नाखुदा' मस्जिद है। दक्षिण में ही गुजरातियों का जैन मंदिर है। साथ ही में १०० साल पुराना गुजराती स्कूल है। गुजराती अस्पताल भी हैं जहां गरीबों कीं मुफ्त सेवा होती है। थाना और चितपुर रोड के बीच शिवजी का जग प्रसिद्ध तालाब बाड़ी मंदिर है जिसमें विशेष है, सूर्य भगवान का भी दर्शन। चितपुर में मछुआ के निकट प्राचीन जैन मंदिर भी मौजूद हैं।

परोपकारी मारवाड़ी समाज इसलिये भी है कि हर वर्ष चाहे वैष्णो देवी, सालासर या मेंहदीपुर हनुमानजी, या राजस्थान-गुजरात के रामदेव बाबा, या झुंझुनू राणी सती, नाथद्वारा का श्रीनाथजी, श्री मनसा माता, बड़ी लम्बोर (लम्बोरधाम) चार धाम या द्वादश ज्योतिर्लिंग या खाटू श्याम या मां शाकम्बरी सबकी पूजा विशाल रूप से कलकत्ते में आयोजित होती है। विशिष्ट धर्म गुरुओं को मोटी से मोटी रकम देकर कलकत्ता में पूजा पाठ और प्रवचन का आयोजन होता है।

देश के किसी भी सरकारी अस्पताल में जायें वहां गरीब वेमौत मारा जाता है। पर धन्य है मारवाड़ी और गुजराती समाज जिन्होंने गरीबों के हित को ध्यान में रखा। गरीबों और मध्यमवर्गीय लोगों के लिये मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, विशुद्धानन्द अस्पताल, भारत रिलीफ सोसाइटी आदि सक्रिय हैं। १९३४ में बिहार भूकम्प में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ने सैकड़ों लोगों को जीवन दान दिया था। यह परोपकार की अद्‌भुत मिसाल है। पेयजल के लिये काशी विश्वनाथ सेवा समिति उड़ीसा, आसाम, बिहार और लातूर (महाराष्ट्र) में कई बार प्राकृतिक प्रकोप में जल पिलाकर एवं भोजन खिला कर लगातार सेवा कार्य करता ही रहा है। ऐसा उदाहरण

सर्व भारत में देखने तो क्या सुनने को भी नहीं मिलता। धर्मशालायें, अस्पताल, स्कूल-कॉलेज, छात्रावास बड़ाबाजार की पहचान हैं। गंगासागर मेला में निःस्वार्थ सेवा, आंखों की चिकित्सा या रक्तदान में मारवाड़ी समाज बढ़ - चढ़कर हिस्सा लेता है। गरीब लड़कियों के सामूहिक विवाह कराना इस समाज का एक मुख्य ध्येय है। १९६० के दशक में इसी समाज ने रुकमिनी नामक विधवा का विवाह राजा मुरारका नामक युवक से करवा कर समाज को जागृत किया था। धन्य है मारवाड़ी समाज! 'गणगौर' और 'शीतला सप्तमी' या अन्य त्यौहारों में मारवाड़ी युवतियों और बालिकाओं को देखते ही बनता है। उनकी पारम्परिक वेश-भूषा और परिधान से राजस्थान का इतिहास झलकता है। हकीकत में बड़ाबाजार (कलकत्ता) मिनी राजस्थान ही लगता है।

बड़ाबाजार में ही मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, विशुद्धानन्द अस्पताल, मातृ मंगल सेबा सदन या पास ही में लोहिया सेवा सदन, नागरिक स्वास्थ्य संघ, भारत रिलीफ सोसाइटी, जैन कल्याण संघ जैसे स्वयं सेवी संस्थान है। वैसे काशी विश्वनाथ सेवा समिति बड़ाबाजार की नाक है। गाय हमारी माता का नारा मारवाड़ी समाज ने ही कलकत्ता में आजादी के पहले बुलंद किया था। उसके फलस्वरूप सोदपुर में गायों का संरक्षण करीब सौ साल से हो रहा है और कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी के नाम से बड़ाबाजार से संचालित होता है।

एम.जी. रोड और मछुआ फल पट्टी के पास गोबिन्द भवन है जिसे आरम्भ किया था बाबू हनुमान प्रसाद पोद्दार ने। यहां गोरखपुर में छपी धार्मिक पुस्तकें बिकती हैं पर यह स्थल राम भक्त स्वर्गीय रामसुख दास जी के चलते तीर्थ स्थल बन गया है। 'कल्याण' मासिक पत्रिका यहीं की देन है और यह मारवाड़ी समाज का एक अभिन्न अंग है। आखिर मारवाड़ी समाज परोपकारी क्यों है? यह प्रश्न कई हिन्दी भाषा-भाषी भी उठा सकते है। उसका मेरे पास एक ही उत्तर हैं – 'बड़ाबाजार ही एक ऐसा पड़ाव है जहां से मारवाड़ी समाज की शाखायें पूरे विश्व में फैलीं। विश्व का हर मारवाड़ी किसी न किसी रूप में अपने आप को बड़ाबाजार से जुड़ा मानकर गौरवान्वित अवश्य महसूस करेगा। रामकृष्ण परमहंस के आदेश का सिर्फ मारवाड़ी समाज ने ही भरपूर साथ दिया, बड़ाबाजार में। उनका कहना था – 'जब धरती पर जन्में हो तो अपनी एक निशानी छोड़ के जाओ।' मारवाड़ी समाज का परोपकारी काम ही उनकी निशानी है।

इतिहासकारों का मानना है कि मुगल बादशाह शाहजहां के वक्त से ही मारवाड़ी समाज ने बंगाल में पदार्पण शुरू कर दिया था। बंगाल का मुर्शिदाबाद जिला इस बात की पुष्टि करता है। जियागंज के मारवाड़ी समाज की पूरे विश्व में पहचान है। आम हिन्दुस्तानी के मन में यह कौतूहल अवश्य होगा कि राजस्थानी मारवाड़ी समाज ने नजदीक में दिल्ली, मुम्बई और अहमदाबाद होते रोजगार की तलाश में हजारों मील बंगाल का रुख क्यों किया? इसका उत्तर साफ है, जहां चीनी और गुड़ की मिठास होगी वहां चींटियों को न्यौता अपने आप कुदरत दे देता है। बम्बई भी अंग्रेजी हुकूमत के चलते मारवाड़ी समाज की पसंद रही होगी।

ब्रिटिश साम्राज्य की ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारत वर्ष में २०० साल राज्य किया। गोविंदपुर गांव (कलकत्ता) में उन्होंने खूंटी गाड़ दी। उन्हें व्यापार आता था। उन्हें यह भी मालूम था पूर्वी बंगाल, बर्मा, नेपाल, सिक्किम, भूटान और आसाम से करोड़ों अरबों रुपयों का व्यापार सम्भव है। उन्हें उनके साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर चलनेवालों की मेहनती लोगों की जरूरत थी और मारवाड़ी समाज ने इस का फायदा उठाया। धन्य हैं बिड़ला, बांगड़ और जालान जैसे विलक्षण बुद्धि, अटल विश्वास, अदम्य उत्साह और असीम धैर्य वाली विभूतियां का। उन दिवंगत आत्माओं ने भांप लिया था कि भावी नस्लों को व्यापार और वाणिज्य में सैकड़ों सालों तक सिरमौर बनाये रखना है। पूर्वी बंगाल में जैसे-जैसे अवसर मिलते गये मारवाड़ी समाज अपनी मेहनत से सब कुछ हासिल करते गये। सूता, पाट/पाटसन (जूट), चावल और चाय के व्यवसाय में बड़ाबाजार (कलकत्ता) लाल होता चला गया। द्वितीय महायुद्ध मारवाड़ी समाज के लिये लक्ष्मीजी की बारिस लेकर आया। अखंड आसाम को या बर्मा, भूटान, सिक्किम और नेपाल को बड़ाबाजार से ही कंट्रोल करता रहा। पूर्वी बंगाल जब बांग्लादेश बना तो लवंग, दालचीनी, कपूर और पावडर दूध का धड़ल्ले से व्यापार चल पड़ा। जबकि पूर्वी पाकिस्तान या बंगाल पाट का गढ़ था और जूट के फाटके से भी रातों रात मारवाड़ी अमीर होते चले गये। कालिम्पोंग, सिक्किम नाथूला पास से तिब्बत का चांदी, सोना, मूंगा और रत्नों का आगमन जो शुरू हुआ तो सोना पट्टी मालामाल हो गया। अंग्रेजों के भारत से चले जाने के बाद उद्योगों पर मालिकाना मारवाड़ी समाज का हो गया।

कमाई के प्रति यह समाज कितना जागरुक है। शायद यही कारण है कि मारवाड़ियों की नकल और भी समाज कर रहे हैं। मारवाड़ी का मूल मंत्र है – 'मारवाड़ी पुराने घाटे पर कभी भी ओरों की तरह नहीं रोता है। उसका पूरा ध्यान आगे आने वाली कमाई पर ही टिकी रहती है।' (क्रमशः)

लोकतंत्र की भाषा

– शम्भु चौधरी

मारवाड़ी समाज का एक बड़ा घड़ा राजनैतिक विचारधारा को सिर्फ व्यापारी नजरिये से देखने का प्रयास करता रहा है। जिसका परिणाम यह हुआ कि एक समय समाज का नेतृत्व करने वाले तपस्वी राजनीति व्यक्तित्व यतः डॉ. राममनोहर लोहिया, बृजलाल बियाणी, जमनालाल बजाज, सेठ गोविन्ददास मालपाणी, विजयसिंह नाहर, इन्दुमती गोयनका, ईश्वरदास जालान, सीताराम सेक्सरिया, प्रभूदयाल हिम्मतसिंहका की राजनैतिक जमीन को दरकिनार कर पीछे दरवाजे की राजनीति को समाज ने अपना लिया। ऐसे लोग राज्यसभा के सदस्य बनाये जाने लगे, जिसका समाज से कोई सरोकार नहीं रहा। जिसका परिणाम यह हुआ कि समाज के आम राजनैतिक कार्यकर्ताओं का मनोबल धीरे-धीरे कमजोर होता गया। इसमें से कुछ अपनी स्थिती को बनाये रखने के लिए राजनैतिक दलों के खजांची बन गये, अर्थात समाज से धन उगाहने का कार्य करने लगे। मारवाड़ी समाज को इस सब से काई सरोकार नही रहा, चुनाव के समय कुछ नेताओं से दोस्ती बनाना एवं जब वे मंत्री बन जाये तो कुछ लोगों को इसका लाभ कैसे मिले इस कार्य के संपादन में खुद की प्रतिष्ठा समझना तो दूसरी तरफ समाज अपने मतदान को महत्वहीन समझने लगा। मतदान के दिन को अवकाश का दिन मानकर ताश या अन्य किसी मनोरंजन को माध्यम बना कर समय गुजार देते।

एक समय बंगाल के विधानसभा में मारवाड़ी समाज के प्रतिनिधि का होना आवश्यक माना जाता था, आज २०११ के विधानसभा में समाज की उपस्थिती शून्य हो चुकी है। इस राजनीतिक शून्यता व हमारी राजनीतिक प्रतिबद्धता को राजनैतिक दलों ने न सिर्फ इसका मूल्यांकन नकारात्मक रखा बल्कि साथ ही साथ बन्द कमरे में समाज को दया का पात्र भी समझा। जहाँ एक तरफ इतर समाज के किसी भी संकट पर ये दल जो सजगता दिखाते हैं वहीं समाज के साथ होने वाली घटनाओं का राजनैतिक लाभ लेने में भी नहीं चूकते। कुल मिलाकर मारवाड़ी समाज दया का पात्र बन चुका है।

एक समय बंगाल के विधानसभा में मारवाड़ी समाज के प्रतिनिधि का होना आवश्यक माना जाता था, आज २०११ के विधानसभा में समाज की उपस्थिती शून्य हो चुकी है। इस राजनीतिक शून्यता व हमारी राजनीतिक प्रतिबद्धता को राजनैतिक दलों ने न सिर्फ इसका मूल्यांकन नकारात्मक रखा बल्कि साथ ही साथ बन्द कमरे में समाज को दया का पात्र भी समझा। जहाँ एक तरफ इतर समाज के किसी भी संकट पर ये दल जो सजगता दिखाते हैं वहीं समाज के साथ होने वाली घटनाओं का राजनैतिक लाभ लेने में भी नहीं चूकते। कुल मिलाकर मारवाड़ी समाज दया का पात्र बन चुका है। समाज में सामाजिक व राजनैतिक कार्यकर्ताओं का इस दिशा में लगातार यह प्रयास रहते हुए भी, कि किस तरह से समाज की इस उदासीनता को बदला जा सके, सकारात्मक पहल के कोई संकेत अब तक हमें नहीं दिखाई दे रहा, जिसका परिणाम यह हुआ कि राजनीति में समाज का प्रतिनिधित्व सिमटता जा रहा है।

जब हम अपने खुद के राजनैतिक मूल्यांकन पर सोचते हैं तो हमें बड़ी निराशा हाथ लगती है, समाज के किसी कार्यकर्ता को जब उसके खुद के प्रयास से किसी राजनैतिक दल की टिकट मिलती है तो हम उसके चुनाव प्रचार में सहयोगी होने की बात तो दूर, अपना वोट तक देने नहीं जाते। इससे समाज के राजनैतिक कार्यकर्ताओं का मनोबल काफी कमजोर हुआ है। हमें आज यह बात समझनी होगी कि राजनीति हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। लोकतंत्र में बोलने की भाषा सिर्फ और सिर्फ आपका मतदान है। जो समाज एकजुट होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करेगा, उसी समाज की बात विधानसभा या संसद तक सुनी जायेगी, धन के बल पर की जाने वाली राजनीति भले ही किसी वर्ग विशेष को लाभ पंहुचाती हो परन्तु इससे समाज का कतई भला न तो हुआ है न होगा। जो समाज अपने मताधिकार का प्रयोग नहीं करेगा उसे लोकतंत्र की भाषा में गूंगा समाज समझा जायेगा।

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
• Front-lit-flex
• Back-lit-flex
• Woven P/E
• Self Adhesive vinyl
• Building wrap
• One way vision
• Vehicle / fleet graphics
• Floor and wall graphics
• Reflective Signage
• Frosted vinyl
• Canvas
• Translite
• Photo realistic poster paper
• Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of -the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

SMS की दुनिया

देश-दुनिया-समाज के घटनाक्रमों पर बेहतरीन समाज की उपज का जायका आपको घर बैठे **SMS** पर मिलता है। कुछ को आप तुरन्त **Delete** करते है तो कुछ को मित्रो को **Forward** करते है। **SMS** बन गया है अपने अच्छे-बुरे दिलचस्प विचारों को सीधे आपके पास पहुंचाने का नायाब तरीका।

SMS की दुनिया में हम पाठको से मजेदार, जायकेदार, तेज-तर्रार **SMS** समाज विकास को **Forward** करने के लिये आमंत्रित करते है जिन्हें हम **Sender** के नाम के साथ प्रकाशित करना चाहेंगे।

– सम्पादक, समाज विकास

- An advocate was responsible for downfall of Indira Gandhi - Siddhartha Shankar Ray
  Again an advocate will be responsible for downfall of Sonia Gandhi - Kapil Sibal
- A Rich Dad took his son to a village to show poverty:
  After the trip he asked son about Poverty, Son replied:
  We have one dog, they have many
  We have a small pool, they have a long river
  We have light, they have stars
  We have small piece of land, they have large fields
  We buy food. They grow theirs and for others too
  "Dad was speechless"
  Then boy said:
  'Thanks Dad for showing how poor we are'
- Living is simple
  Loving is also simple
  Laughing is simple
  Winning is simple too
  Then what is difficult?
  Being 'simple' is difficult
- Try to make four things in your life
  MIND which never MINDS
  HEART which never HURTS
  TOUCH which never PAINS
  RELATION which never ENDS
- Champions are not Supernatural
  They just fight one more minute
  When else quits
  Sometimes one more minute of effort
  Give us the VICTORY
- GODISNOWHERE
  Aap ne kya padha?
  GOD IS NOWHERE
  Or
  GOD IS NOW HERE
  Jeevan isi par nirbhar karta hai
  hum kya dekhte hain.

गीत

– डॉ. मोहन तिवारी 'आनंद'

इनसे कह दो जुल्म न ढाएँ

बच्चों का खुशियों पर हक है।
बच्चे खुश तो इनको शक है।
इतने ढाए कहर किन्तु ये
हर अभाव में भी मुस्काएँ
इन से कह दो जुल्म न ढाएँ।

ये क्यों जाते भूल
कि इनके भी बच्चे हैं
तन के उजले मन के सच्चे,
बच्चे तो होते अच्छे हैं
इनके आँसू बज्र बनेंगे
कह दो इनसे न टकराएँ
इनसे कह दो जुल्म न ढाएँ।

बच्चे वाले अगर न समझें
पीड़ा बच्चों की,
तो फिर समझो खैर नहीं है
अच्छों-अच्छों की,
जग की छोड़ो अपनी सोचो
अपने बाल स्वयं न नोचो
चुका वक्त लौट नहीं आता
कह दो इसे न व्यर्थ गवाएं
इन से कह दो जुल्म न ढाएँ।

सम्पर्क – सुन्दरम बंगला
५०, महाबलीनगर
कोलार रोड, भोपाल

बुढ़ापा अभिशाप नही अनुभव है जीवन का

– रामचरण यादव

सदर बाजार, बैतूल

व्यक्ति के जीवन में देर सबेर बुढ़ापा तो आता ही है लेकिन जरूरी नहीं कि उसे अभिशाप ही मानकर हम घबराने लगे। यह तो सृष्टि का नियम है। परिवर्तन भी जरूरी है इसलिए बुड़ापे की ढलती उम्र को भी सहज स्वभाव से स्वीकार करना चाहिए। अपने व्यवहार में चिड़चिड़ापन, रुखापन, उम्र में बड़े होने का अनावश्यक दम्भ शामिल नही किया जाय तो बेहतर हैं। आखिर बुढ़ापा आता ही क्यों है? हमारे शरीर और मन में क्या ऐसे परिवर्तन आ जाते है जिसे बुढ़ापा नाम दे दिया जाता है। क्या हम अपनी ऐसी अक्षमताओं, बीमारियों और कमजोरियों पर नियंत्रण करते हुए बुढ़ापे के अभिशाप से मुक्ति नही पा सकते? इस बारे में चिकित्सा विशेषज्ञों का मत है कि हमारे देश में करीब दो हजार वर्षो से मानव जीवन की औसत आयु ५५ वर्ष से अधिक नही पायी गयी। आमतौर पर ६० वर्ष की आयु में शरीर कार्य क्षमता १० से ३० प्रतिशत तक घट जाती है इसका सीधा असर हृदय धमनियों में होने वाले रक्त प्रवाह पर भी पड़ता है। परिणामस्वरूप रक्तचाप भी १० से ४० एम.एम. तक बढ़ जाता है। वृद्धावस्था में रक्त की कमी के कारण शिराओं में सिकुड़न से कठिनाई बढ़ती हैं और रक्तचाप असाधारण रूप से बढ़ जाता है।

अधिक आयु तथा शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित व पौष्टिक आहार, शारीरिक परिश्रम, व्यायाम, चिन्ता मुक्त मस्तिष्क एवं शुद्ध विचार अधिक लाभकारी होते हैं। बुढ़ापे में अपने मन को प्रसन्न रखकर भी कई तरह की चिन्ताओं तथा रोगों से मुक्ति पाना संभव है। यह भी ध्यान जरूर रहे कि अपनी शारीरिक स्वास्थ्य क्षमता से ज्यादा बोझिल दायित्व आप पर न पड़े। खाली समय हो तो उसे निरन्तर अध्ययन, पठन-पाठन व मनोरंजन में लगायें।

बुढ़ापे की ओर बढ़ती महिलाओं में इसका प्रभाव पुरुषों की अपेक्षा अधिक होता है। कहा जा सकता है कि यदि ८० वर्ष की आयु में किसी पुरुष की हड्डियों की शक्ति में २० प्रतिशत का ह्रास होता है तो इसी आयु में महिलाओं की ४५ प्रतिशत तक की क्षति हो सकती है। प्रसिद्ध मनोविज्ञानी जी. वी. परांजपे का कथन है कि उम्र के ढलान पर आप वृद्धों के सम्पर्क में कहीं अच्छे रहेंगे क्योंकि जब वे रहन सहन नये खान पान की आलोचना करेंगे तो वह आपके मन से मेल खाने वाला होगा। उनके वार्तालाप को सहानुभूति से सुनेंगे और समझेंगे। उनके निकट उनकी संगत में बैठकर आपको लगेगा कि आप पुराने दिनों में पंहुच गये है अनायास ही अपनी इस वृद्धावस्था को कुछ क्षणों के लिए भूलकर अपने को युवा अनुभव करेंगे और हंसी तथा अट्टहासों में जमकर भाग लेते दिखाई देंगे। आपकी बोरियत निश्चय ही कम होती नजर आयेगी।

वृद्धावस्था में यह ध्यान रखे कि हम जरूरत से ज्यादा परिवार के सदस्यों अथवा नयी पीढ़ी के लोगों पर अपने ही अनुभवों, विचारों को न लादे। बजाय इसके सामंजस्य हेतु बदले हुए परिवेश में अपने को ढालने का प्रयास करते रहना चाहिये। बच्चों और युवकों की किसी अप्रिय बात को कहने सुनने को अधिक गंभीरता से न लीजिये। बुढ़ापे से घबड़ाएँ नही बल्कि इसे बचपन और जवानी की भांति बिताने का प्रयत्न करें। यह सर्वथा गलत है कि बुढ़ापा एक अभिशाप है। बुढ़ापा अनुभवों की खान और एक सच्चा वरदान है। इसके वास्तविक स्वरूप को पहचाने, साथ ही इस अवस्था में और अधिक निखार लाने की कोशिश करें तभी जीवन सार्थक होगा।

प्रसंगवश

सुख का असली मज़ा

पं. मोतीलाल नेहरू को अपने हाथ से तरकारी (सब्जी) पकाने और विशेष अनुपात की चाय बनाने का शौक था। १९२२ की बात है कि जब वे लखनऊ जेल की 'दिवानी बैरक' में बंद थे, मैं कभी-कभी उनकी सब्जी आदि छील दिया करता था। एक दिन 'दम-आलू' बनाये बैठे थे। मैं किसी दूसरी बैरक में गप-शप के लिए चला गया। लौटने पर मैंने पूछा, सब्जी ठंडी हो रही है भाईजी, आपने खाई क्यों नहीं?' बोले – इतने शौक़ से बनायी थी, तुम हैंचो, मटर-गश्ती को चले गये, क्या मैं अकेला खाऊँ? क्योंकि दाद देने वाले न मिलें तो ग़ज़ल सुनाना बेकार है।' सुख का असली मज़ा साझेदारी में है। यही नियम दुख पर भी लागू होता है। जैसे हँसने के लिए किसी साथी का होना अनिवार्य है, इसी तरह रोने का मज़ा भी केवल अपनों ही के बीच में है।

महावीर त्यागी (आज़ादी का आंदोलन.....)

पुस्तक समीक्षा

सहज राजस्थानी व्याकरण

– हरीराम शर्मा, मण्डावा

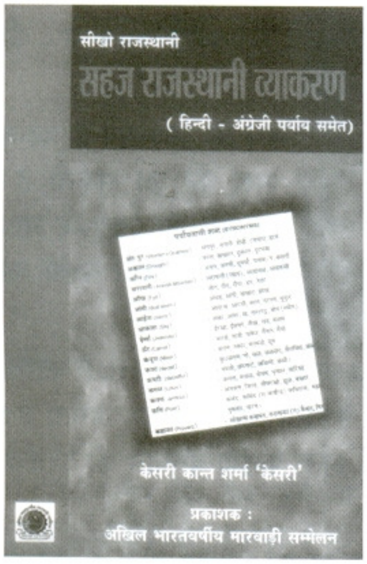

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजस्थानी भाषा के प्रचारक कवि श्री केसरी कांत शर्मा 'केसरी' द्वारा रचित 'सहज राजस्थानी व्याकरण' ने राजस्थानी भाषा-भाषियों के भाषा ज्ञान हेतु एक बड़े अभाव की पूर्ति की है। एक सशक्त कवि, कथाकार, अनुवादक, समालोचक, स्तम्भकार होने के साथ साथ राजस्थानी कोशकार और सिद्धहस्त वैयाकरण के रूप में अपनी प्रतिभा से राजस्थानी साहित्य की समृद्धि में विशिष्ट योगदान दिया है। देश विदेश में रहने वाले दस करोड़ राजस्थानी बोलने वालों को भाषा के अनुशासन से अवगत कराने में और लिखित व वाचित सम्प्रेषण को सुगम और गेय बताने में केसरीजी की रचना की उपादेयता स्वयं सिद्ध है। शब्द और वाक्य-विन्यास, भाषा के मूल तत्वों की रीति-नीति के सिद्धान्तों के अध्ययन से, ध्वनि (उच्चारण) के तौर-तरीकों की बारीकियों के निरुपण के साथ साथ राजस्थानी शब्दों के मानकीकरण में भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। विद्वान लेखक ने सरल विधि से व्याकरण के अंगों/उपांगो जैसे वचन, संख्या, जेंडर, विलोम व पर्यायवाची शब्द-संकलन, अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप, अधिसंख्य शब्दों के एकल स्थानापन्न शब्द, राजस्थानी कहावतें व मुहावरे, राजस्थानी में अपनाये गये प्रचलित विदेशी शब्द आदि का अनुवाद और मौलिक संकलन करके पुस्तक को संग्रहणीय बनी दिया है। इसके अतिरिक्त लोककथाओं, लोकगीतों, लोक-साहित्य एवं संस्कृति के अनुभव जैसे जनजीवन में व्याप्त राजस्थानी खाद्यं, पेय, पशु-पक्षी, बोलियां, पेड़ पौधों, फल-सब्जियों, जितनी खेलकूद, वार्तालाप की बानगी आदि को सम्मिलित करके गागर में सागर भर दिया है। समकक्ष हिंदी अंग्रेजी शब्दों से इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गयी है। खासकर प्रवासी राजस्थानी जो भाषानुशासन की बारीकियों से परिचित नहीं हो, वे इससे शब्दों के सही उपयोग से शुद्ध बोल-लिख सकेंगे। राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता मिलने पर नई पीढ़ी को राजस्थानी भाषा सिखाने हेतु पाठ्यक्रम में यह पुस्तक शामिल होने योग्य है जिसके लिए अधिकारी विद्वान केसरी जी का यह मौलिक प्रयास स्तुत्य और सराहनीय है।

पुस्तक का नामकरण 'सरल राजस्थानी व्याकरण' के स्थान पर 'सहज राजस्थानी व्याकरण' भी सटीक और समीचीन है। बच्चे को जन्म के साथ मां द्वारा मायड़ भाषा की भाव-तरंगे (सह+ज) = साथ चलती है जो सहज शब्द बोध का उद्वेक करानेवाली होने से यह नाम ज्यादा सार्थक और अर्थवत्तापूर्ण है।

नाम : सहज राजस्थानी व्याकरण
लेखक - केसरी कांत शर्मा 'केसरी'
प्रकाशक – अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता
पृष्ठ : ८०, मूल्य : एक सौ रुपये मात्र
प्रथम संस्करण – जनवरी - २०११

अग्रवाल समाज का अध्ययन

युवा अग्रवाल के संपादक ओमप्रकाश अग्रवाल द्वारा अग्रवाल समाज पर संकलित / संपादित पुस्तक है जिसमें अग्रवाल समाज की उत्पत्ति, विकास, योगदान, उनकी संस्कृति आदि की जानकारी प्रदान करने वाले आलेख हैं।

अग्रवाल की उत्पति पर जहां भारतेंदु हरिश्चंद्र का प्रामाणिक आलेख है वहीं डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार, डॉ. योगानंद शास्त्री, विष्णु प्रभाकर, विरजानंद दैवकरणि, चंद्रराज भंडारी, डॉ. स्वराज्यमणि अग्रवाल, डॉ. हरिकृष्ण प्रसाद अग्रहरि, अर्जुन कुमार, शिवकुमार गोयल, ब्रजनारायण अग्रवाल प्रभृति विद्वानों के आलेखों के अतिरिक्त अन्य सामग्री भी प्रस्तुत की गई है जिससे अग्रवाल समाज संबंधी विविध जानकारियां मिलती है।

पुस्तक की भूमिका डॉ. योगानंद शास्त्री ने लिखी है।

अग्रवाल समाज से संबंधित विविध पुरासामग्री के माध्यम से भी इनके अवदान को उजागर करने का प्रयास किया गया है। वहीं वर्तमान में समाज द्वारा व्यापक हित में किए जा रहे सार्वजनिक हित के कार्यों का भी विवरण इस पुस्तक में हैं।

– डॉ. भैरूलाल गर्ग

पुस्तक : अग्रवाल समाज एक अध्ययन
सम्पादक : ओमप्रकाश अग्रवाल
प्रकाशक : युवा अग्रवाल ट्रस्ट
वितरक : ज्ञान बुक्स प्रा. लि.
ज्ञान कुंज, २३ अंसारी रोड,
दरियागंज, दिल्ली-११०००२
पृष्ठ : ११४, मूल्य : १९० रूपये

इन्कम टैक्स की नई फाईल क्यों और कैसे?

– **गोविन्द जैथलिया**, एडवोकेट

L.T.I. फाईल : एक अशिक्षित पुरूष या महिला की फाईल उसके बाँयें हाथ के अँगूठे के निशान को किसी प्रशासनिक अधिकारी के द्वारा सत्यापित करके शुरू की जा सकती है। एक विकलांग व्यक्ति / हाथों से अक्षम व्यक्ति की फाईल **Power of Attorney** के द्वारा शुरु की जा सकती है। अभी १०२ वर्ष की अशिक्षित महिला ने नई फाईल बनवाई है।

माइनर फाईल : **18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे की आय उनके माँ या बाप की आय में जोड़ने का प्रावधान है परन्तु Children Benefit Trust का निर्माण करके उनकी अलग फाईल शुरू की जा सकती है। वर्तमान समय में M.B.A. की पढ़ाई में 25 लाख रूपये खर्च है। अतः 18 वर्ष की आयु के बाद नई फाईल शुरु करने से इतनी बड़ी पूंजी निर्माण में 30% टैक्स देय होगा। ऐसे में सभी बच्चों का अलग-अलग Trust बना लेना ही उचित होगा।**

HUF की फाईल : पहले लड़का होने से ही **HUF** फाईल शुरू की जाती थी, परन्तु अब शादी होते ही नई **HUF** फाईल शुरू की जा सकती है। दोनों नई फाईल बनाने से भी पूँजी बढ़ती है तथा आयकर कम लगता है। यह आम जनता की भ्रम धारणा है कि आय तो कर योग्य है ही नहीं अतः फाईल बनवाने की दरकार भी नहीं हैं।

लेडिज फाईल : एक स्त्री की फाईल स्त्री-धन से मजबूत की जा सकता है। एक कन्या को बालिग होने के पूर्व ही कई बार दिवाली व जन्मदिन के मौके पर उसके माँ-बाप व मामा-मामी आदि सम्बन्धियों से भेंट मिलती है। अतः इसकी लिस्ट बनाकर एफिडेविट बनाकर देने से फाईल बढ़ जाती है जबकि एक विवाहित स्त्री की फाईल विवाह के समय मिले नगद रूपये एवं **Miscellaneous** तथा सोने के जेवरात, चांदी के बर्तन आदि से बढ़ाई जा सकती है। पाँच लाख से ज्यादा कीमत की ज्वैलरी हो तो रजिस्टर्ड वेलूअर से रिपोर्ट लेना आवश्यक है।

मैरेज ट्रस्ट फाईल : एक अविवाहित पुरुष या स्त्री के वैवाहिक खर्च हेतु मैरेज ट्रस्ट फाईल बनाई जा सकती है।

कम्पनी फाईल : **Limited Liability Partnership** को भी **18% M.A.T.** की तरह **A.M.T.** देना पड़ेगा।

समाज विकास में वर-वधू परिचय

आपकी पत्रिका 'समाज विकास' आगामी जुलाई अंक से 'वर-वधू परिचय' स्तम्भ के अन्तर्गत वैवाहिक सम्बंधों हेतु संक्षिप्त वर-वधू परिचय का निःशुल्क प्रकाशन आरम्भ कर रहा है।

इच्छुक अभिभावकों से अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्री का नाम, शिक्षा, उम्र, जाति, गौत्र, कद, रंग आदि विवरण सम्पादक, समाज विकास, १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७, फोन व फैक्स ०३३-२२६८ ०३१९ के नाम आमंत्रित है।

प्रान्तीय समाचार

महेश बैंक का व्यापार १५०० करोड़

संवाददाताओं को संबोधित करते महेश बैंक के चेयरमैन श्री रमेश कुमार बंग, साथ में है अन्य पदाधिकारी।

महेश बैंक का कर पूर्व अनुमानित लाभ गत वर्ष के १९.३३ करोड़ की तुलना में इस वर्ष २१.४३ करोड़ रुपये और व्यापार १५०० करोड़ के पूर्व घोषित लक्ष्य के आंकडे को पार करता हुआ १५१३.२० करोड़ रुपये पहुँच गया है। उक्त जानकारी बैंक के चेयरमैन रमेश कुमार बंग ने बैंक के हैदराबाद स्थित मुख्यालय पर आयोजित संवाददाता सम्मेलन में दी।

उन्होंने बताया कि बैंक प्रत्येक क्षेत्र में सुदृढ़तापूर्वक विकास की ओर अग्रसर है। आर्थिक परिस्थितियाँ अनुकूल न होने के बावजूद जमा प्राप्तियाँ ७८५.८५ करोड़ रुपये से बढ़कर ९०७.५८ करोड़ रुपये रही जो गत वर्ष की तुलना में १२१.७३ करोड़ रुपये अधिक हैं। इसी प्रकार ऋण स्वीकृतियाँ गत वर्ष के ४५७.२५ करोड़ रुपये से बढ़कर ६०५.६२ करोड़ रुपये हुई जो गत वर्ष से १४८.३७ करोड़ रुपये अधिक हैं। बैंक पूँजी और संरक्षित निधि १३१.४६ करोड़ से बढ़कर १४४.०० करोड़ रुपये हुई। कार्यशील पूँजी ९३८.६६ करोड़ से बढ़कर १०७५.८२ करोड़ हुई है। कुल आय ९७.६५ करोड़ से बढ़कर १०७.८६ करोड़ रुपये रही। ऋण-जमा अनुपात ६६.७३% रहा। प्रति कर्मचारी व्यापार २.७२ करोड़ से बढ़कर ३.२२ करोड़ रुपये हुआ है।

राजस्थानी की मान्यता के लिए आमरण-अनशन

अखिल भारतीय राजस्थानी भाषा मान्यता संघर्ष समिति (नागौर) के संस्थापक एवं राष्ट्रीय मुख्य संगठक श्री लक्ष्मणदान कविया ने राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए आमरण अनशन का मार्ग अपनाने का निर्णय लिया है। श्री कविया ने बताया कि राजस्थानी भाषा विश्व की २५ वीं एवं देश की तीसरी समृद्ध भाषा होने के बावजूद राजनैतिक उदासीनता एवं जन जागृति के अभाव में आजादी के ६४ वर्षो के बाद भी विश्व के १६ करोड़ नागरिकों की मातृभाषा है तथा जो उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भी पढ़ाई जा रही है। इसलिए अब यह जरूरी हो गया है कि देश के सबसे बड़े राज्य की प्रतीक राजस्थानी भाषा को अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाने, राजस्थान लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परिक्षाओं में राजस्थानी की जानकारी आवश्यक करवाने एवं संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित करवाने हेतु गांधीवादी विचारधारा का सबसे सशक्त तरीका अनशन करने से ही सरकारों का ध्यान आकर्षित हो सकता है।

हास्य व्यंग्य

'डीकरा, तेरा भी जवाब नही'

'मुगल-ए-आजम' लगातार कई तूफानों से उभरती हुई मुकम्मिल हुई थी, जिसकी कोई उम्मीद नजर नहीं आती थी, क्योंकि फिल्में इतनी धीरे भी नहीं बनतीं, जितनी ये फिल्म बन रही थी। कभी-कभी तो खुद निर्माता सापूरजी पालनजी आसिफ से कहते, 'करीम भाई, भूल जा इस फिल्म को ये कभी नहीं पूरी होगी,' और करीम भाई अपनी सिगरेट की राख चुटकी बजाते हुए हवा में उड़ाते हुए कहते, 'बाबा! ये करीम का कमाल है। मजाक नहीं है, पापाजी को नंगे पांव रेगिस्तान की गर्म रेत पर चलवाना। उसके बेटे मेरा मर्डर करवा देंगे। राजकपूर को तो तू भी जानता है जनमदाता। कैसे बर्दास्त करेगा कि उसका बाप राजस्थान की रेत पर नंगे पांव चले। अगर पापाजी को कुछ हुआ, तो तेरा सारा पैसा डूब जायेगा। पर मैं ऐसा भी नहीं होने दूँगा। पृथ्वीराज सिकंदर है सिकंदर। ये दुनिया भी फतह कर लेगा, और एक दिन यही फिल्म हमारी हिन्दुस्तानी फिल्मों का इतिहास बदल देगी। तुम पैसा बटोरोगे बाबा, स्टर्लिंग कॉर्पोरेशन माला माल हो जायेगा। चल बाबा, अब दस लाख का चेक और काट दे, परसों मुझे राजस्थान जाना है पूरे काफिले के साथ।' और निर्माता पारसी बाबा अपना माथा पीट लेता - 'तू कितने लाख और लगायेगा इस फिल्म पर! मैं तो अब एक पैसा भी डालने वाला नहीं, समझा' और के. आसिफ फीकी मुस्कुराहट के साथ कहता – 'बाबा! ये अखिरी शेड्यूल है और फिल्म, कम्पलीट' और सापूरजी बोलते - 'ये डॉयलाग मैं पिछले दस सालों से सुन रहा हूँ, 'एक रंडी को नचवाने को तूने पूरा 'शीशमहल' बनवा लिया था' और आसिफ साहब बीच में ही टोक कर कहते, 'सेठ! वो रंडी नहीं हैं, मेरी अनारकली है, जिस पर आज सारी फिल्म इंडस्ट्री जान देती है। केदार शर्मा से पूछ मधुबाला के नखरे, वो बतायेगा तुझे।' बहुत तू-तू, मैं-मैं के बाद दस लाख का चेक फिर सेठ को साईन करना पड़ा और आसिक ने मुस्कराते हुए कहा, 'वेल डन, कट, कैमरा स्टार्ट और कैमरा स्टार्ट हो जाता है। कैमरामैन मोहम्मद अयूब कैमरा संभाले नया सीन उतारता है। नृत्य सम्राट लच्छू महाराज दरबारे अकबरी के लिये मधुबाला को कत्थक नृत्य के टुकड़े समझाते हैं और बैकग्राउंड में रिकार्ड बजता है–'मोहे पनघट पे नंदलाल छेड़ गयो री, मोरी सारी अनारी भिगोय गयो री' और रामजी जो लच्छू महाराज की सहायक थी, वो अनारकली बनी मधुशाला को इशारा करती है कि नाच के स्टेप शुरू करो और के. आसिफ मारे खुशी से दोहरे होकर महाराजजी के पाँव छू लेते हैं। और पूरे डांस के रशेज देखकर खुद सापूरजी बोल उठे, 'डीकरा तेरा भी जवाब नहीं,' और के. आसिफ नौशाद अली की पीठ ठोंक देते हैं। निगार सुल्ताना की कव्वाली-'जब रात है ऐसी मतवाली तो सुबह का आलम क्या होगा' सुनकर हिन्दुस्तान का दीवाना फिल्म दर्शक चीख पड़ता है- 'ला-जवाब, बे-जवाब है, 'मुगल-ए-आजम।'

– शंतिपति (अरुण उजाला, फरवरी ११)

डोकानिया शिशु मंदिर

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के विशिष्ट सदस्य एवं समाजसेवी श्री श्यामलाल डोकानिया ने अपने पिताश्री की स्मृति में भागलपुर (बिहार) के ओलियाबाद ग्राम में लगभग साढ़े तीन हजार वर्गफुट एरिया में बृजमोहन डोकानिया सरस्वती शिशु मंदिर नाम से एक प्राइमरी स्कूल का निर्माण करवाया है। डोकानिया चेरिटेबुल ट्रस्ट द्वारा संचालित इस स्कूल का उद्‍घाटन सन्यासी महात्माओं के कर-कमलों से इसी वर्ष मार्च महिने में हुआ था।

बताया गया कि लगभग दो वर्ष पूर्व श्री डोकानिया ने देवघर के बुराईग्राम में भी एक प्राथमिक स्कूल का निर्माण करवाया था, जिसका नाम है सत्यभामा डोकानिया सरस्वती शिशु मंदिर। वर्तमान में इसमें कुल डेड़ सौ छात्र-छात्राएं पढ़ रहे है। इसके अलावा श्री डोकानिया ने महानगर के सुप्रसिद्ध ठनठनिया कालीमंदिर के निकट अपनी पत्नी सत्यभामा की स्मृति में छह महिनों पूर्व एक ठंडे पेयजल की मशीन भी लगवायी है।

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 27689/277391/021
Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE
SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201
DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 June, 2011
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com